# चन्दामामा

दिसम्बर १९७१

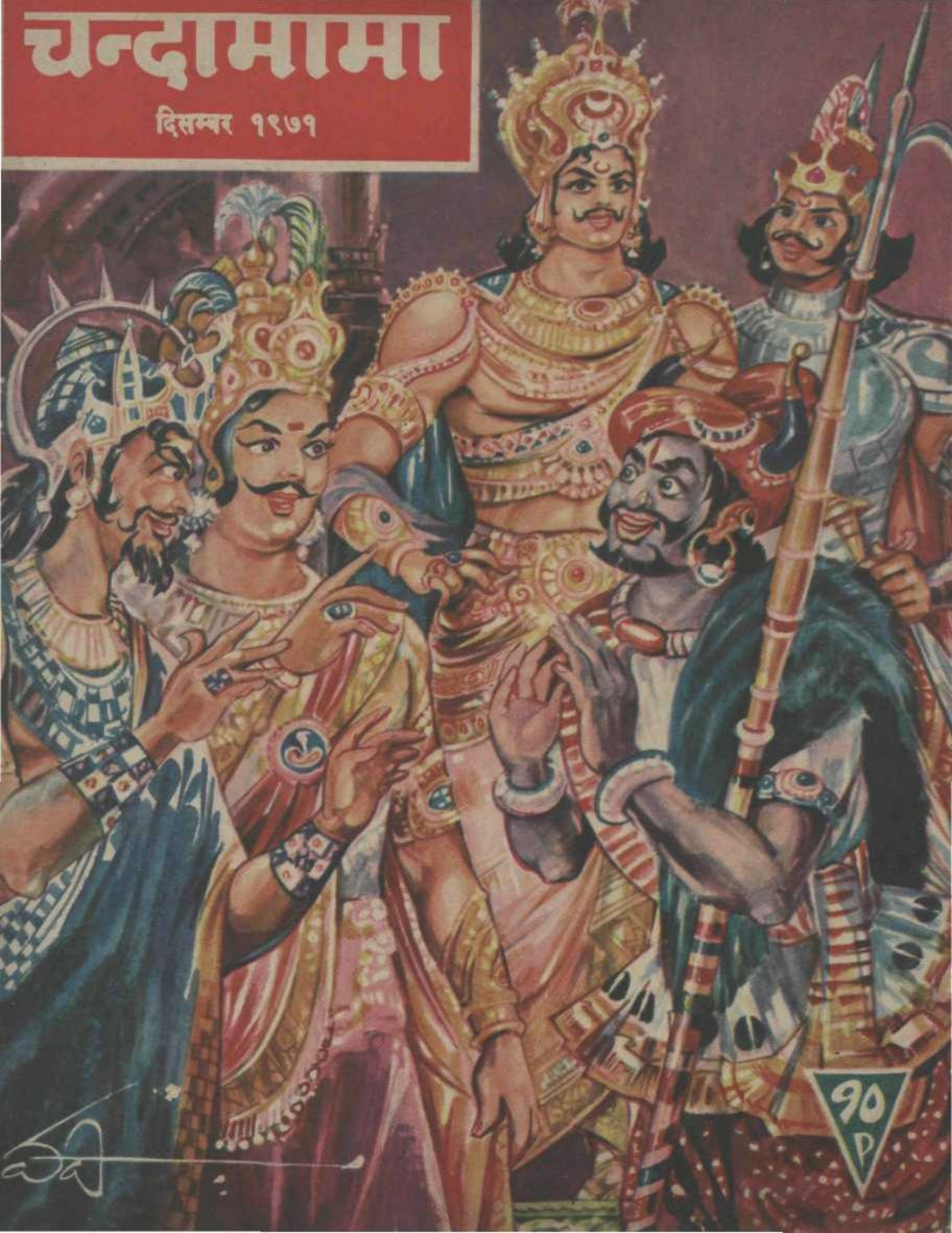

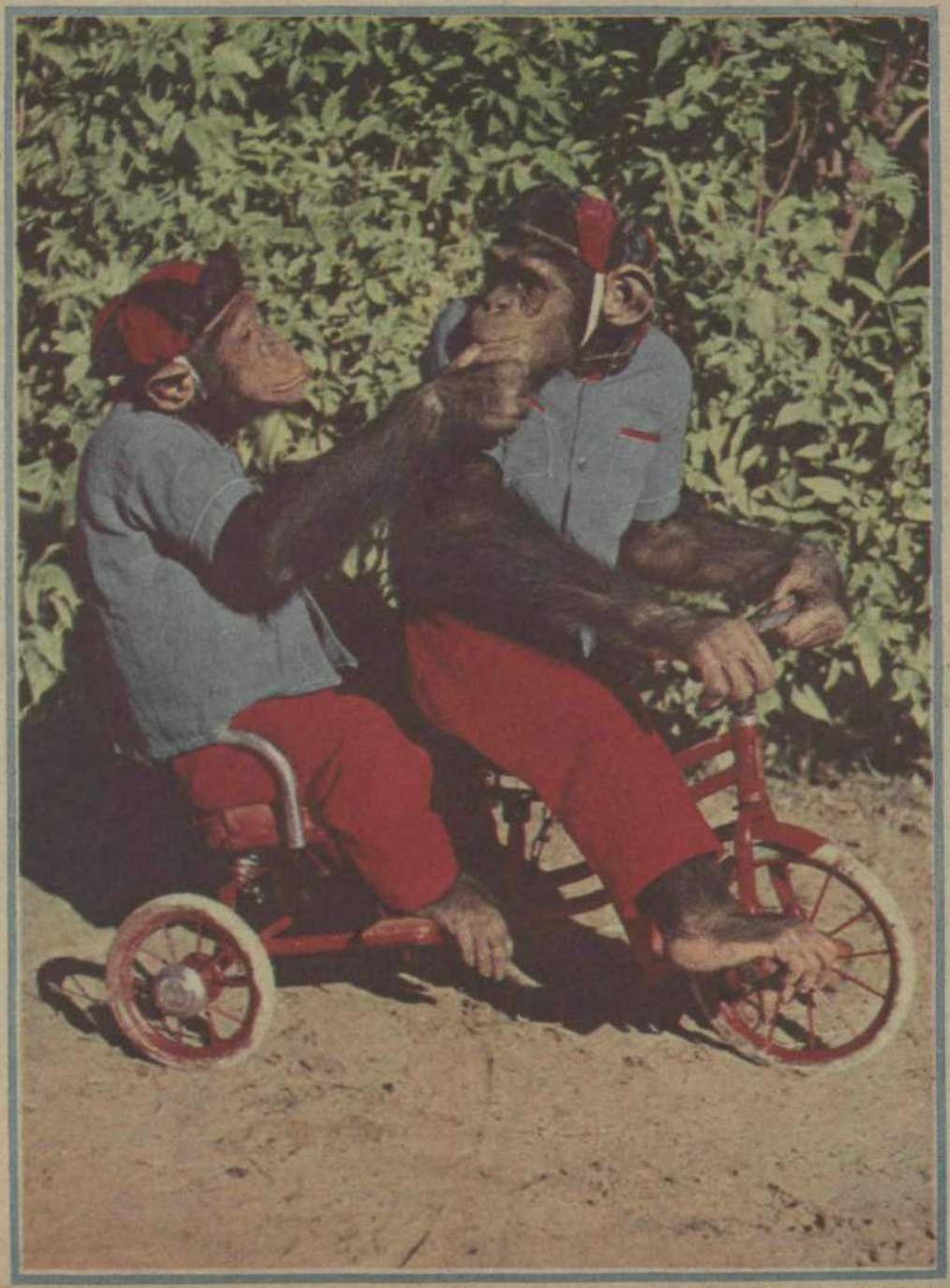

*Photo by :* SURAJ N. SHARMA

GOLD STAR
पीपरमेंट
Peppermint
लज़्ज़तदार
मज़ेदार
ठंडा मीठा
पारले
एक्स्ट्रा-स्ट्राँग
पिपरमिण्ट
एक पैकेट में ९ पिपरमिण्ट—
कितनी कम कीमत पर!
मज़ेदार तरोताज़ा—
तरोताज़ा मज़ेदार
PARLE
everest/962/PP hin

# चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पाँचवीं तारीख़ से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

**डाल्टन एजन्सीस, मद्रास - २६**

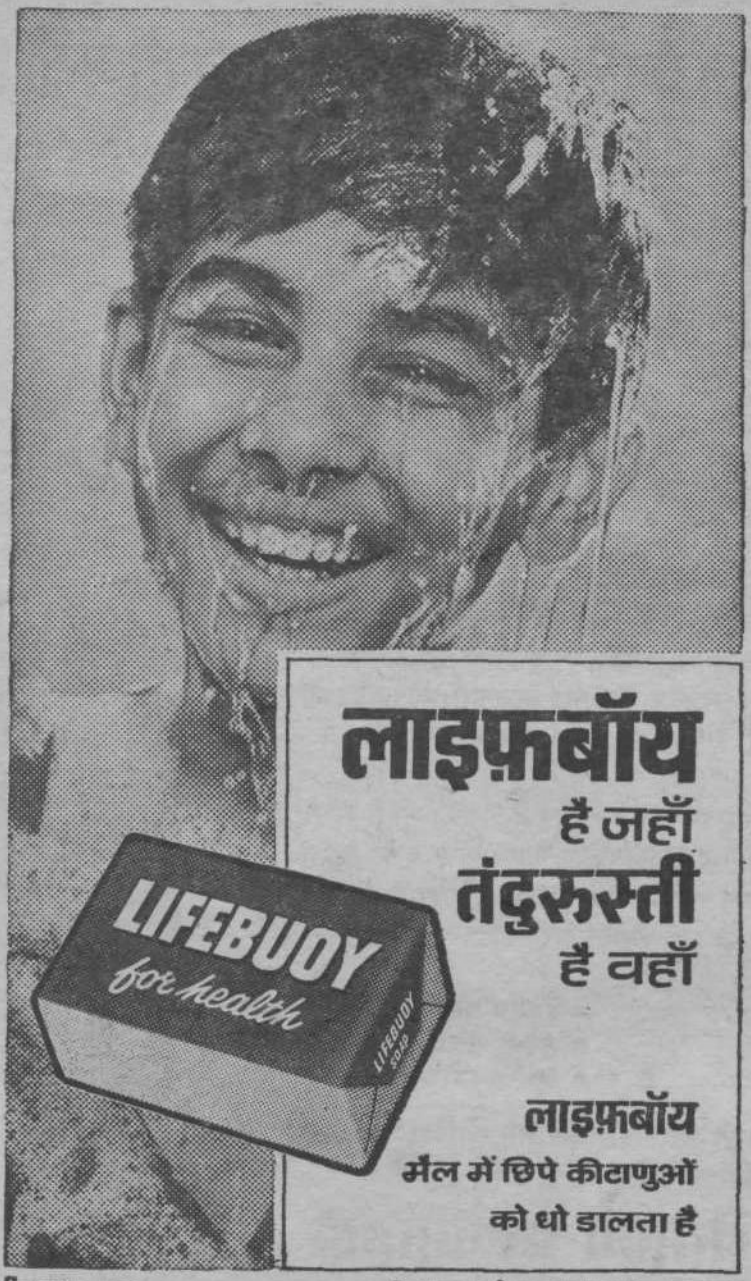
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती
है वहाँ
LIFEBUOY
for health
LIFEBUOY SOAP
लाइफ़बॉय
मैल में छिपे कीटाणुओं
को धो डालता है
लिटास- L. 61-77 HI
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

# इस बेचारे दांत की हत्या कर दी गयी!

बड़ी ही बेरहमी से। तिलतिल जलाकर। और इस दर्दनाक सच्चाई का पर्दाफ़ाश तब हुआ जब दांत ही साफ़ हो चुका था। गुनाहगार कौन था? लापरवाही। जानते हुए भी ऐसे-वैसे टूथपेस्ट से ब्रश करने की लापरवाही।

काश! इस दांत के मालिक ने नियमित रूप से बिनाका फ़्लोराइड इस्तेमाल किया होता। तो आज यह दिन न देखना पड़ता। क्योंकि बिनाका फ़्लोराइड में एस एम एफ़ पी है, जो दांतों की तीन तरह से हिफ़ाज़त करता है:

- इनेमल को मज़बूत बनाता है
- मुंह में एसिड नहीं बनने देता
- दंत-क्षय रोकता है

**अपने दांतों की हत्या मत कीजिए!**
**दांतों की हिफ़ाज़त के लिए**

## बिनाका फ़्लोराइड

C I B A Cosmetics

UEKA-CF-30 HINDI

# चन्दामामा

संस्थापक: नागिरेड्डी
संचालक: 'चक्रपाणी'

इस मास की बेताल कथा में वर्णित नीति सदा के लिए लागू होती है। जब राजा अपने शासन सूत्र को गलत रास्ते की ओर मोड़ देता है, तब उसके दुष्परिणाम प्रजा में भी व्याप्त हो जाते हैं। क्योंकि न्याय, नीति व धर्म का पालन करने की इच्छा रखने वाले भी राजा के व्यवहार से परिस्थितियों के प्रभाव के कारण गलत मार्ग पर क़दम बढ़ाने के लिए विवश हो जाते हैं। 'सज्जनता का दण्ड' नामक लंबी कहानी इस अंक में समाप्त हो जाती।

वर्ष: २४ दिसम्बर १९७१ अंक: ४

CHITRA

# अमर वाणी

नास्ति कामसमो व्याधि, र्नास्ति मोहसमो रिपुः,
नास्ति क्रोधसमो वह्नि ज्ञानात्परं सुखम् । ॥ १ ॥

[ काम के समान रोग, मोह के समान शत्रु, क्रोध के समान अग्नि और ज्ञान से बढ़ कर सुख नहीं हैं । ]

क्रोधो मूल मनर्थानां, क्रोधः संसार बंधनम्,
धर्मक्षयकरः क्रोध, स्तस्मात् क्रोधं विसर्जयेत् ॥ २ ॥

[ क्रोध सभी अनर्थों का मूल है, उसके द्वारा संसार के बंधन तथा धर्म का क्षय होता है । इसलिए क्रोध को त्यागना चाहिए । ]

क्रोधो हि शत्रुः प्रथमो नराणां,
देहस्थितो देहविनाशनाय,
यथास्थितः काष्टगतो हि वह्निः,
स एव वह्नि द्धहते शरीरम् ॥ ३ ॥

[ क्रोम मनुष्यों का प्रथम शत्रु है । जिस प्रकार लकड़ी के भीतर की अग्नि लकड़ी को जलाती है, वैसे ही क्रोध शरीर को जला डालता है । ]

# योगी की महिमा

प्राचीन काल में सिंहपुरि नामक नगर में एक योगी रहा करता था। उसके साथ चन्द शिष्य भी थे। वह योगी जब तब राजा की सेवा में पहुँच जाता तथा धर्म और नीति के संबंध में उपदेश दे राजा को मानसिक शांति प्रदान करता था। इस वजह से राजा के मन में योगी के प्रति बड़ी श्रद्धा और भक्ति पैदा हो गयी।

राजा ने एक दिन योगी से बताया कि वह राजा के पास ही रह जाय तो उसके तथा उसके शिष्यों के लिए आवश्यक सारी सुविधाएँ दी जायेंगी।

मगर योगी ने राजा की बात नहीं मानी, उसने कहा–"राजन्, मैंने अपना एक नियम बना लिया है कि रोज़ पांच घरों से भिक्षा स्वीकार कर अपना पेट पाल लूँ, यूँ ही मुफ़्त में प्राप्त भोजन में खाना नहीं चाहता।"

योगी की बातें सुनने पर राजा ने राज्य में ढिंढोरा पिटवाया कि योगी तथा उसके शिष्य किसी के भी घर पहुँचे तो उन्हें ज़रूर भिक्षा दे। इस कारण से योगी और उसके शिष्यों को बड़ी आसानी से भिक्षा प्राप्त हो जाती थी। इसे देख कई भूखे लोग योगी के शिष्य बनकर उसके साथ घूमने लगे।

एक दिन योगी भिक्षा के लिए चल पड़ा और शराब की दूकान के सामने अपने शिष्यों के साथ जा खड़ा हुआ। दुकानदार ने बाहर आकर कहा–"योगी महाराज, अन्दर आइये। मगर मेरे पास आपको देने के लिए शराब के सिवाय कुछ नहीं है।"

योगी भीतर पहुँचा। दुकानदार ने योगी को एक पुरवे में शराब भर कर दी। "कृष्णार्पणम्" कहते योगी ने एक घूँट में सारी शराब पी डाली। अपने गुरु को

राजेन्द्र शर्मा

शराब पीते देख, उसके सारे शिष्यों को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन सबों ने भी एक एक पुरवा शराब पी डाली।

इस घटना के द्वारा दो बातें हुईं–एक तो योगी के साथ रहनेवाले शिष्यों में से अधिकांश लोग शराब के जायके के आदि हो शराबी बन गये।

दूसरी बात यह कि राजा ने सुना, योगी ने शराब पी ली है और उसके शिष्य कहलाने वाले लोग केवल शराबी हैं। इसलिए उसने अपने द्वारपालों को आदेश दिया कि योगी को आइंदा अपने महल में क़दम रखने न दे।

योगी के बारे में लोगों में बड़ा बुरा प्रचार हुआ। अब कई लोग योगी से घृणा भी करने लगे, इस वजह से उसे भिक्षा पाने के लिए बड़ी देर तक अनेक घरों के सामने खड़ा रहना पड़ता था। इस कारण उसके शिष्यों को फाका करना पड़ता था। योगी के साथ रहते कोई फ़ायदा न देख उसके सभी शिष्य एक एक करके उसे छोड़ कर चले गये।

कुछ दिन बाद योगी भिक्षा के वास्ते घूमते-घूमते एक सुनार की दुकान के सामने जा खड़ा हुआ।

योगी को देख सुनार मज़ाक में बोला–"महाराज, मेरे पास देने को कुछ नहीं है। साँचे में गला हुआ सोना है। क्या लेंगे?"

योगी ने कहा–"अच्छी बात है, बेटा, लाओ।" इन शब्दों के साथ सुनार के हाथ से चिमटा ले साँचे को हाथ में लेकर "कृष्णार्पणम्" कहते योगी ने साँचे में गले सोने को एक घूँट में पी डाला और अपने रास्ते आगे बढ़ गया।

यह अद्‌भुत समाचार राजा को मालूम हुआ तो वह योगी की महिमा पर चकित हो गया। तब वह खुद योगी को ढूँढ़ते हुए आ पहुँचा और उसके पैरों पर गिर कर क्षमा मांगी।

# छठा चोर

एक जमाना था, जब उज्जयिनी नगर में चोरों की तूती बोलती थी। राजा के सिपाहियों ने चोरों को पकड़ने के कई प्रयत्न किये, मगर वे असफल रहें। लगता था कि चोर बड़े ही होशियार और अक़्लमंद हैं। नगर के धनियों ने राजा के पास जाकर निवेदन किया कि चोरों से उनकी रक्षा करें। राजा ने यह सोच कर धनियों को आश्वासन दिया कि वह चोरों को पकड़ने का खुद प्रयत्न करेगा।

आधी रात के वक़्त राजा वेष बदल कर राजमहल से चल पड़ा और एक चौक में जा खड़ा हुआ। थोड़ी देर में एक एक करके चार आदमी वहाँ पर आ पहुँचे। राजा ने उनके निकट जाकर पूछा–"मैं भी तुम लोगों जैसा एक चोर हूँ। क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम में से हर एक की क्या खासियत है?"

"मैं किसी भी क़िस्म की दीवार में सेंध लगा सकता हूँ।" पहले चोर ने कहा।

"मैं हर प्राणी की ध्वनि का अर्थ बता सकता हूँ।" दूसरे चोर ने कहा।

"ताला लगी पेटी की बास देख मैं बता सकता हूँ कि पेटी के अंदर क्या चीज़ है?" तीसरे चोर ने बताया।

"एक बार मैं किसी की आवाज़ सुनता हूँ तो सालों बाद भी मैं उसे पहचान सकता हूँ।" चौथे चोर ने समझाया।

इसके बाद चारों चोरों ने राजा से पूछा–"तुम भी हमसे दोस्ती कर रह हो, इसलिए बताओ कि तुम्हारी क्या खासियत है?"

"मेरे साथ रहने वाले चोरों को कभी फाँसी की सज़ा नहीं होती।" राजा ने चोरों से कहा।

महेश्वर प्रसाद

तब पाँचों मिलकर चोरी करने चल पड़े। यह सवाल उठा कि उस रात को कहाँ पर चोरी की जाय। राजा ने सुझाया कि आज रात को राजमहल में चोरी करेंगे। इस पर बाक़ी चारों ने उसका समर्थन किया।

सब लोग राजमहल के पास पहुँचे। पहला चोर सेंध लगाने लगा। इतने में गीदड़ की आवाज़ सुनायी दी।

"उस बोली का क्या अर्थ है?" राजा ने दूसरे चोर से पूछा।

"घर का मालिक जाग रहा है, यही अर्थ है।" दूसरे चोर ने बताया।

इतने में उल्लू बोल उठा। राजा ने उसका अर्थ पूछा। "कहता है कि घर का मालिक हमारी चोरी देख रहा है।" दूसरे चोर ने अर्थ समझाया।

इस पर चोर चोरी करना छोड़ चकित हो खड़े ही रह गये। उसी वक़्त एक कुत्ता भूँक उठा, तुरंत दूसरा कुत्ता भी भूँकने लगा।

"कुत्ते क्या कह रहे हैं?" राजा ने दूसरे चोर से पूछा।

"पहला कुत्ता हमें भाग जाने को कहता है और दूसरा कुत्ता पहले कुत्ते को मुँह बंद करने को कह रहा है।" दूसरे चोर ने साफ़ समझाया।

"आज सगुन अच्छा नहीं है। चलो, कहीं दूसरी जगह जाये।" चोरों ने कहा।

"तुम लोगों को डरने की कोई ज़रूरत नहीं, जो काम शुरू किया, उसे पूरा करो।

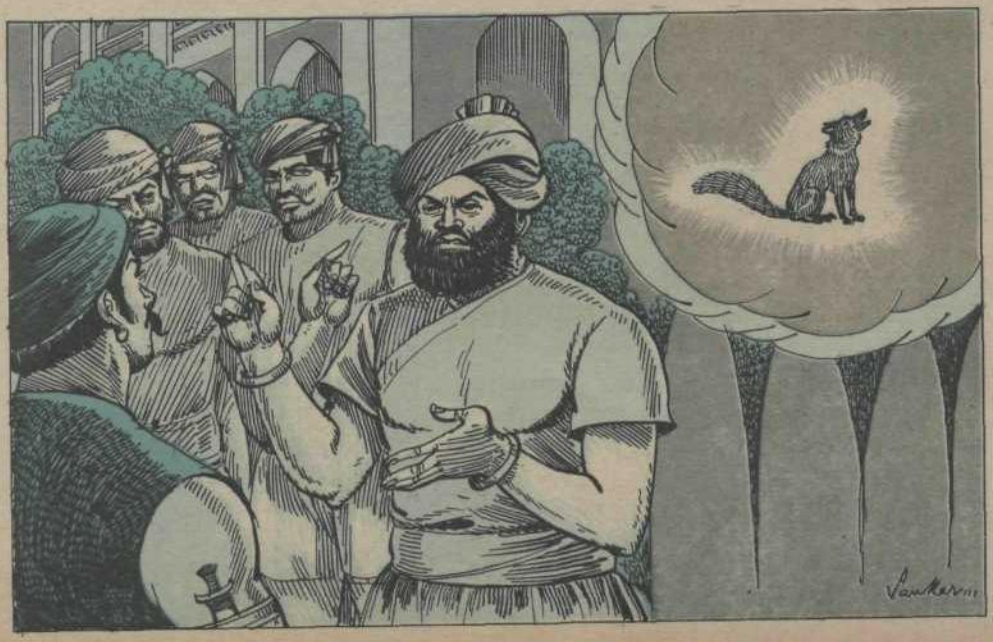

में तुम लोगों की जान के वास्ते अपनी जान लड़ाने को तैयार हूँ।" इन शब्दों के साथ राजा ने चोरों को प्रोत्साहन दिया, दूसरे चोर की अक़्लमंदी पर राजा मन ही मन चकित था।

चोरों को यह कदापि पसंद न था कि वे नये मित्र के सामने कायर कहलाये, `सलिए जो काम शुरू किया, उसे पूरा करने का चारों ने निश्चय किया। पहिले चोर ने सेंध लगाया।

चोरों को राजमहल में छे पेटियाँ मिल गयीं। तीसरे चोर ने उनकी बास सूँघ कर कहा–"हमारी क़िस्मत खुल गयी। इन पेटियों में हीरे-जवाहरात, रत्न और सोना जैसी क़ीमती चीज़ें भरी हैं।"

पांचों चोरों ने पांच पेटियाँ ले लीं और छठी पेटी को सेंध के पास छोड़ वहाँ से चल पड़े। दूसरे दिन की रात को अमुक जगह पर मिलने का निश्चय करके चोर अपने अपने रास्ते चले गये। राजा अपने महल को लौट आया।

सवेरा हुआ। दुर्गरक्षक चारों तरफ़ घूमते आया और सेंध को देख अचरज में आ गया। भीतर की पांच पेटियाँ गायब हैं। छठी पेटी को चोर भूल से सेंध के पास छोड़ गये हैं। तुरंत दुर्गरक्षक उस पेटी को अपने घर पहुँचा कर लौट आया और सीधे राजा के पास जाकर बोला–"महाराज, हम लोग बहुत सावधान थे, फिर भी कल रात को चोर राजमहल में

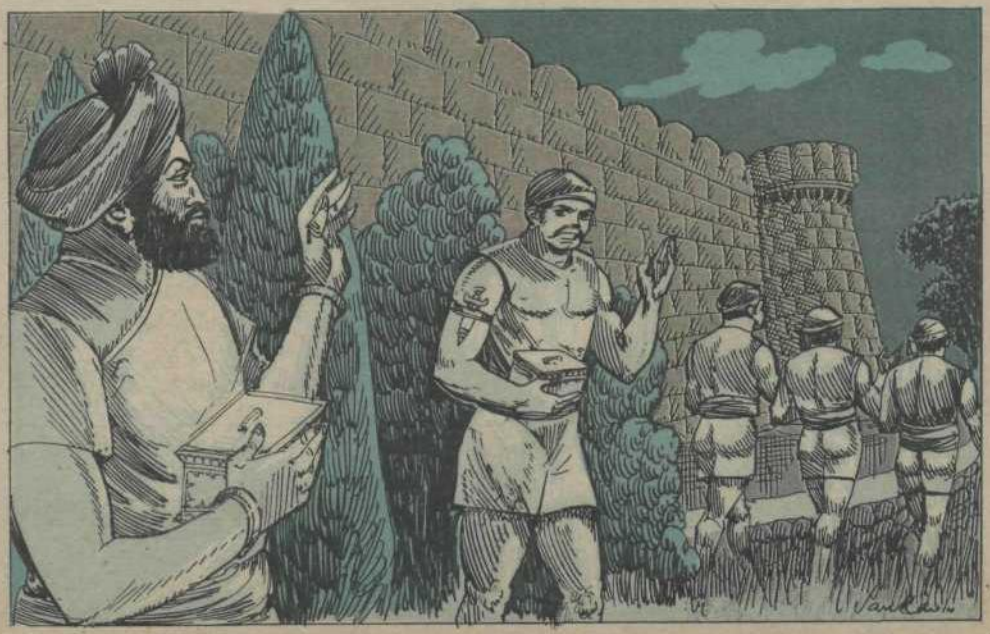

घुस कर गहनों की छे पेटियाँ उठा ले गये हैं।"

राज को यह मालूम हो गया कि छठा चोर कौन है? उसने दुर्गरक्षक को यह कह कर भेज दिया–"चिंता न करो, आज सभी चोर पकड़े जायेंगे।"

उस रात को जब चारों चोर निश्चित प्रदेश में पहुँचे, तब राजभटों ने उन चोरों को बन्दी बनाया। दूसरे दिन राज-दरबार में सभी चोरों को मृत्युदण्ड घोषित किया गया।

यह घोषणा सुनकर चौथे चोर ने राजा को पहचान लिया कि वह उनका नया दोस्त है। इसलिए उसने पूछा–"महाराज, कल रात को जब हमने चोरी की, तब हमारे साथ एक चोर और था। उसने हमें आश्वासन दिया था कि उसके साथ रहनेवाले चोरों को मृत्यु दण्ड से वह बचायेगा। मगर उसने अपनी ख़ासियत को साबित नहीं किया। आप जो मृत्यु दण्ड दे रहे हैं, क्या वह उसके लिए भी लागू होगा?"

"इस पर राजा ने हँसते हुए कहा–"तुम्हारे साथ रहने वाला पाँचवाँ चोर अपने वचन का पालन करेगा।" फिर सभासदों की ओर मुड़ कर राजा ने कहा–"वह पांचवाँ चोर मैं ही हूँ। मैं न केवल इनके मृत्यु दण्ड को रद्द कर देता हूँ बल्कि इन लोगों ने जिन पेटियों को चोरी की, वे पेटियाँ इन्हें पुरस्कार के रूप में देता हूँ। क्योंकि ये लोग बड़ी अजीब प्रकार की शक्तियाँ रखते हैं। आज से मेरे दरबार में नौकरी पाकर ये लोग चोरियाँ करना छोड़ देंगे। मगर छठे चोर की बाबत आप लोग बिलकुल नहीं जानते। हमारा दुर्गरक्षक ही छठा चोर है।"

राजा के मुँह से यह बात सुनते ही दुर्गरक्षक का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। राजभटों ने जाकर दुर्गरक्षक के घर की तलाशी ली तो वह छठी पेटी मिल गयी। राजा ने दुर्गरक्षक को मृत्यु दण्ड नहीं दिया, बल्कि देश निकला सज़ा दी और उसका कार्य अपने साथी चोरों को सौंप दिया।

# शिलारथ

[ १४ ]

[वृक्ष के पास इंतजार में खड़े महेन्द्रनगर के सेनापति के पुत्र को खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने डरा दिया। वह अपने सैनिकों के साथ भाग खड़ा हुआ। परशुवाले युवक को पेड़ के कोटर में छोड़ खड्गवर्मा और जीवदत्त उत्तरी दिशा में आगे बढ़कर एक नाले के पास पहुँचे। नाले के उस पार कुछ सैनिकों ने उन्हें घेर लिया। बाद—]

खड्गवर्मा और जीवदत्त घुड़सवार सैनिकों की ओर आश्चर्य के साथ देखते खड़े रह गये। जीवदत्त को संदेह हुआ कि ये लोग कहीं महेन्द्रनगर के सिपाही तो नहीं? यह बात वह उन लोगों से पूछने ही वाला था कि तभी एक अश्वारोही ने भाला उठाकर कहा–"हमारे साथ चुपचाप राजा के पास चलो! वरना जान की खैर नहीं! हूँ, देखते क्या हो! चलो।"

खड्गवर्मा झट तलवार खींचने को हुआ लेकिन जीवदत्त ने उसे रोका और अश्वारोही से पूछा–"तुम्हारे राजा कौन? क्या तुम महेन्द्रनगर के निवासी हो?"

"अरे भाई, कहाँ महेन्द्रनगर, और कहाँ हमारा आनंदपुर का राज्य! हमारे राजा तो नित्यानंद हैं! यह समझो कि तुम्हारे विघ्नेश्वर पुजारी के दिन निकट आ गये हैं।" अश्वारोही ने जवाब दिया।

"विघ्नेश्वरपुजारी कौन है? हम उसे बिलकुल नहीं जानते! तुम लोग भूल करते हो! हमारा उसके साथ कोई संबंध ही नहीं, हमें अपने रास्ते जाने दो।" जीवदत्त ने कहा।

"तुम्हारी इन चिकनी-चुपड़ी बातों पर हमारे राजा यक़ीन नहीं करेंगे! चलो, हमारे राजा के पास! वहीं पर तुम्हारा फ़ैसला होगा।" अश्वारोही ने भाला चमकाते कहा।

"खड्गवर्मा, ये लोग हमारे बारे में गलत धारणा रखते हैं। नाहक़ खून-खराबी क्यों? इनके राजा को हम अपना सच्चा परिचय दे, अपने रास्ते चले चलेंगे।" जीवदत्त ने समझाया।

इसके बाद खड्गवर्मा और जीवदत्त सैनिकों के साथ राजा नित्यानंद के पास गये। नित्यानंद ने उनकी ओर नखशिखपर्यंत एक बार देखा और पूछा–"वह दुष्ट विघ्नेश्वर पुजारी किस पहाड़ी गुफा में रहता है? उसकी योजनाएँ क्या क्या हैं? उसके साथ कितने जंगली लोग हैं? राक्षस हाथी को वह कैसे पालतू बना सका है? ये सारी बातें हमें साफ़-साफ़ बतला दो तो तुमको हम प्राणों से छोड़ देंगे, वरना जान से हाथ धो बैठोगे! समझें!"

ये सवाल सुनते ही जीवदत्त क्रोध से कांप उठा, फिर भी अपने क्रोध पर क़ब्ज़ा करते हुए बोला–"महाराज, आपने जो सवाल किये, उनका एक भी जवाब हमारे पास नहीं है। मैं सच बताता हूँ कि विघ्नेश्वर पुजारी के बारे मे हम बिलकुल नहीं जानते। हमें झूठ बोलने की कोई आवश्यकता नहीं; हम तीर्थाटन करनेवाले क्षत्रिय युवक हैं।"

"यह तो साफ़ मालूम ही होता है कि तुम लोग युवक हो, पर इस बात पर कैसे यक़ीन किया जा सकता है कि तुम लोग क्षत्रिय हो और तीर्थाटन करने जा रहे हो?" राजा नें व्यंग्य से पूछा।

"लो, अभी मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ?" ये शब्द कहते खड्गवर्मा ने म्यान से

तलवार निकाली। उसी वक़्त थोड़ी दूर पर पेड़ों व शिलाओं की ओट में से कुछ जंगली युवक ढाल और तलवार लिये "विघ्नेश्वर पुजारीजी की जय!" चिल्लाते राजा की ओर दौड़ते आये।

रथ पर सवार राजा नित्यानंद चिल्ला उठा–"दुश्मन को मारो, काटो।"

राजा के सैनिक भाले उठाकर जंगली युवकों की ओर बढ़ने ही जा रहे थे कि सामनेवाले टीले पर एक राक्षस हाथी आ खड़ा हुआ। वह देखने में दो-तीन हाथियों के परिमाण में था। उस पर किरीट धारण किये विघ्नेश्वर पुजारी सवार था।

राक्षस हाथी को देखते ही राजा नित्यानंद के सैनिक थर थर काँप उठे और पीछे मुड़कर भागने लगे। जंगली लोग उनका पीछा करते राजा के रथ के निकट पहुँच रहे थे। राजा ज़ोर से गरज उठा–"क्या आनंदपुर के शूर सैनिक अपने राजा की रक्षा नहीं कर सकते? यह कैसा कायरपन है? तुम लोग जंगली लोगों का हिम्मत के साथ समना करो। तब तक लड़ो, जब तक दुश्मन का एक भी व्यक्ति जिंदा है!"

इस भगदड़ में रथ से जुता एक घोड़ा डरकर रथ को अगल-बगल खींचने लगा।

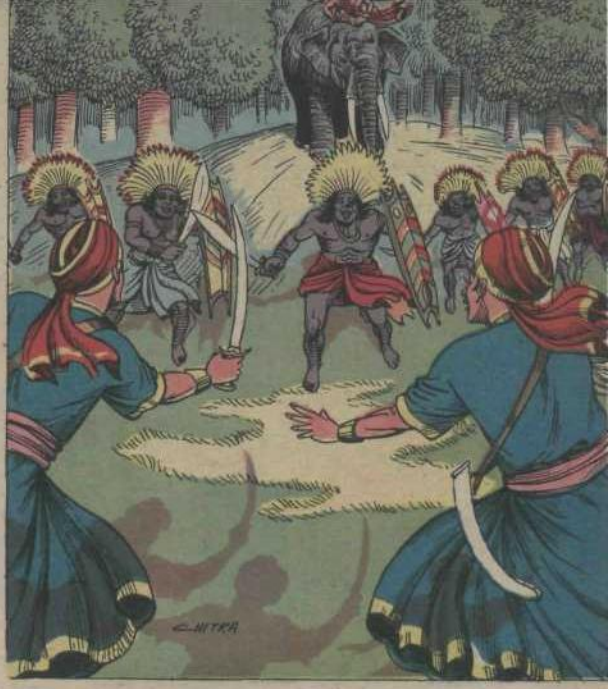

तो दूसरे घोड़े ने रथ की ओर बढ़नेवाले एक जंगली को ज़ोर से लात मार दी। राजा ने देखा कि उसके सैनिक उसकी रक्षा करना छोड़ भाग रहे हैं और जिन दो युवकों को वह विघ्नेश्वर पुजारी का गुप्तचर समझ रहा था, वे चुपचाप खड़े हैं; राजा को आश्चर्य हुआ कि अगर ये विघ्नेश्वर के पुजारी के अनुचर होते तो ज़रूर उन पर टूट पड़ते, तब वह फिर चिल्ला पड़ा–"हे क्षत्रिय युवक, मैं समझ गया कि तुम दोनों पुजारी के अनुचर नहीं हो! तुम मेरी रक्षा करोगे, तो मैं अपने दरबार में तुम्हें ऊँचे ओहदे दूँगा। बढ़िया पुरक्कार देकर तुम्हारा सम्मान करूँगा।"

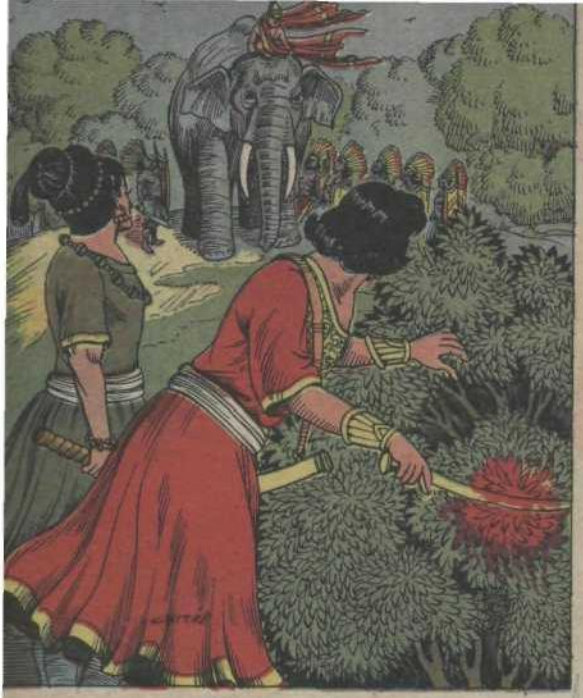

रथ पर खड़े काँपनेवाले राजा तथा उसे बन्दी बनाने के लिए बढ़नेवाले जंगली युवकों तथा दूर टीले पर खड़े राक्षस हाथी को देख जीवदत्त के दिल में राजा के प्रति दया उमड़ पड़ी। वह खड्गवर्मा को सचेत करते हुए बोला–"खड्गवर्मा, हम असली बात बाद को जान लेंगे, मगर हमें पहले राजा की रक्षा करनी है। उस राक्षस हाथी पर बैठे आदमी को देखने पर न मालूम मेरे तन-बदन में आग सुलग रही है।" ये शब्द कहते अपने दण्ड से जंगली युवकों पर प्रहार करते जीवदत्त आगे बढ़ा।

खड्गवर्मा अपने मित्र के आदेश के इंतज़ार में खड़ा था। जीवदत्त को जंगली युवकों पर हमला करते देख खड्गवर्मा सिंहनाद कर उठा, वह भी बिजली की भाँति जंगली लोगों पर कूद पड़ा और गाजर-मूली की तरह उनके सिर काटने लगा। घायल तथा मरे हुए लोगों को छोड़ जंगली लोग चीखते चिल्लाते राक्षस हाथी की ओर दौड़ पड़े।

इस दृश्य को देख राजा नित्यानंद खुशी के मारे उछल पड़ा और बोला–"वाह कैसी वीरता! कैसा पराक्रम! ये दो ही युवक यमदूतों जैसे इतने सारे जंगली युवकों को भगा पाये। ऐसी वीरता मैंने कहानियों और वीरगाथाओं में सुनी है। लेकिन कभी अपनी आँखों से नहीं देखी!"

"अब तो देख ली है न! आप अपने रास्ते अपने नगर को लौट जाइये। शिकार खेलने के शौक़ में जंगल में आकर आप मुसीबत में खुद फँस गये और हमें भी फँसा दिया।" जीवदत्त ने कहा।

"हमारे नगर में आकर मेरे द्वारा पुरस्कार पाये बिना ही चले जाओगे? मैं तुम दोनों को अपने दरबार में ऊँचे ओहदे देना चाहता था। मुझे निराश न करो।" नित्यानंद ने कहा।

"हमें पुरस्कार और ओहदे नहीं चाहिये। आपकी उदारता के लिए अनेक

धन्यवाद। तीर्थाटन करते हम अपना वक़्त बिताना चाहते हैं। अब हमें आज्ञा दीजिये।" ये शब्द कहते जीवदत्त ने खड्गवर्मा की ओर देखा।

खड्गवर्मा अपनी तलवार से टपकनेवाले खून को एक झुरमुट के पत्तों पर रगड़ते राक्षस हाथी की ओर एकटक देख रहा था। जो जंगली युवक बच गये थे, वे हाथी के पास पहुँच कर उस पर बैठे पुजारी से कुछ कह रहे थे। पुजारी उन्हें समझाते हुए बीच-बीच में खड्गवर्मा तथा जीवदत्त की ओर देख रहा था।

जीवदत्त खड्गवर्मा के निकट पहुँच कर बोला–"मित्र, लगता है कि तुम्हें पुनः अपनी तलवार का प्रयोग करना होगा! पुजारी की चेष्टाओं से मालूम होता है कि वह जंगली युवकों को हम पर उकसा रहा है। लगता है कि हमें इसके साथ लड़ना ही पड़ेगा।"

जीवदत्त की बातें पूरी भी न हो पायी थीं कि राक्षस हाथी एक-एक क़दम बढ़ाते नीचे की ओर उतरने लगा। उसके पैरों की गति देख खड्गवर्मा आश्चर्यचकित हो बोला–"जीवदत्त! यह किस जाति का हाथी है? देखने में दो हाथियों के बराबर है। उसकी गति को देखते हो न? उसी वक़्त पैदा हुए बच्चे के समान पैर

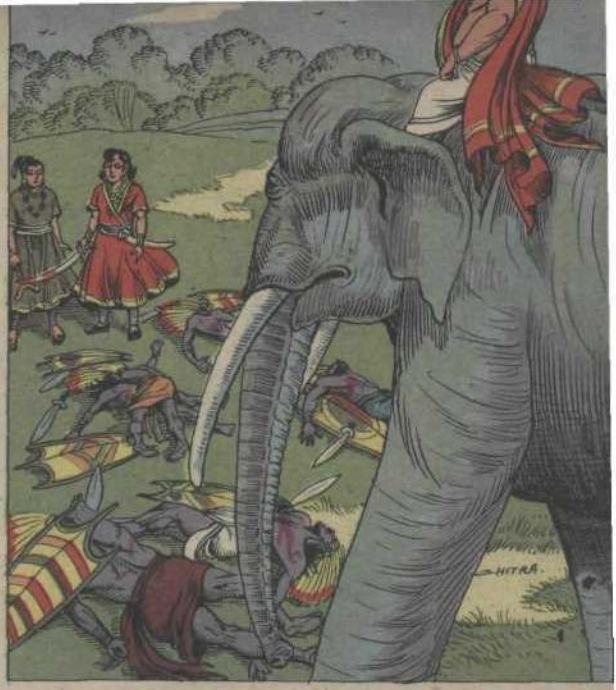


लड़खड़ा रहा है। उसकी सूंड तो ज़रा भी हिलती तक नहीं, लगता है कि ऐंठ गयी हो।"

"मुझे तो यहाँ तक संदेह हो रहा है कि क्या हाथी ही है?" ये शब्द कहते जीवदत्त ने नित्यानंद की ओर देखा।

उस समय नित्यानंद के रथ पर एक सारथी बैठे घोड़ों को हाँक रहा था। वह रथ को मोड़ने के प्रयत्न में था। सारे सैनिक दूर पर खड़े भयभीत आँखों से हाथी की ओर ताक रहे थे। जीवदत्त ने भांप लिया कि वे लोग किसी भी क्षण वहाँ से भागने की तैयारी में हैं।

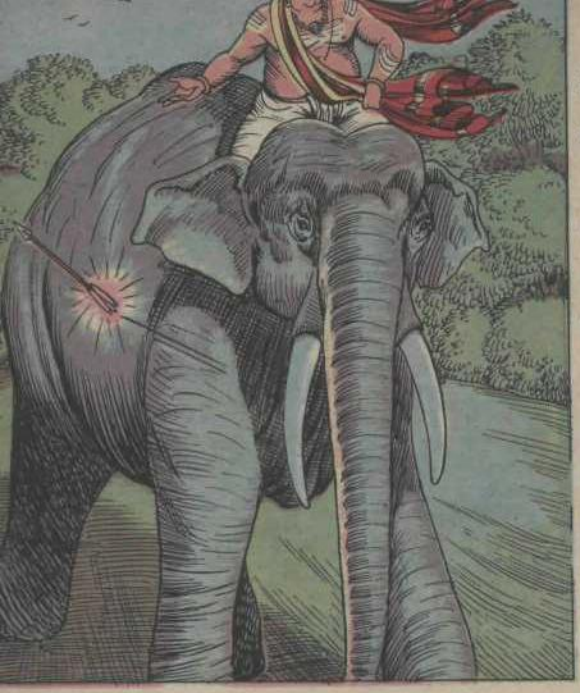

जीवदत्त ने ऊँचे स्वर में नित्यानंद से कहा–"आप शीघ्र रथ को घुमा कर यहाँ से चले जाइये। आपके सैनिक फिर एक बार आपको छोड़ भागने के प्रयत्न में हैं।"

नित्यानंद ने अपने सैनिकों की ओर मुखातिब हो समझाया–"हमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। इन दो महावीरों के होते वह राक्षस हाथी हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता।" इसके बाद उसने खड्गवर्मा तथा जीवदत्त से कहा–"तुम दोनों की हिम्मत तारीफ़ के क़ाबिल है। विघ्नेश्वर पुजारी के उस राक्षस हाथी का किसी भी तरह वध कर सके, तो तुम दोनों को मेरी तथा मेरे राज्य की रक्षा करने का श्रेय प्राप्त होगा।"

"उस हाथी को देख आप डरते ही क्यों? एक ही वार से उसकी सूँड या पैर को काटकर नीचे गिराया जा सकता है।" खड्गवर्मा ने कहा।

"हे वीरवर, यह ऐरावत जाति का हाथी है। उस शरीर पर चमड़ा नहीं इस्फात का कवच है। यदि हम उस पर बाण चलाये तो वह उछलकर दूर जा गिरता है। उस राक्षस हाथी को मारने का हमने सब तरह से प्रयत्न किया, असफल होने के कारण ही हम लोग डरते हैं।" नित्यानंद ने कहा।

इस्फाती कवच का नाम सुनते ही खड्गवर्मा को आश्चर्य हुआ। उसने जीवदत्त से कहा–"क्या यह ऐरावत जाति का हाथी है? उसके शरीर पर इस्फात का कवच है? तब तो हम परीक्षा करके देखते हैं।" इन शब्दों के साथ खड्गवर्मा ने धनुष उठा कर हाथी के पेट पर निशाना देख बाण छोड़ दिया। बाण सीधे हाथी के पेट पर जा लगा, दूसरे क्षण झन् की आवाज़ हुई। बाण उछल कर दूर जा गिरा, इस पर विघ्नेश्वर पुजारी अट्टहास कर उठा।

"उस पुजारी की हिम्मत तारीफ़ करने के लायक़ है। मगर यह हाथी ऐसा बड़ा

क्यों है? उस पर इस्फाती कवच कैसा? हमें इसका फ़ैसला करके ही यहाँ से निकलना होगा।" खड्गवर्मा ने कहा।

"हाँ, हाँ, इसमें कोई दगा है! पुजारी के सर पर किरीट क्यों है? इसकी राजा के साथ दुश्मनी क्यों? शायद मंदिर की पूजा करना छोड़ गद्दी पर बैठे हुकूमत करना चाहता है। सावधानी से चलो। इस हाथी की ख़बर लेंगे।" जीवदत्त ने कहा।

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त अपनी ओर बढ़नेवाले हाथी की ओर बढ़े। इसे देख राजा नित्यानंद तथा उसके सैनिक विस्मय में आ गये। उन्हें यह दुस्साहस मालूम हुआ और उन्हें इस बात का डर भी लगा कि वह राक्षस हाथी किसी भी क्षण उन्हें सूंड से उठा कर पटक सकता है या पैरों से रौंध सकता है।

पर विघ्नेश्वर पुजारी उस राक्षस हाथी पर ठाठ से बैठकर अपने अगल-बगल से चलने वाले जंगली युवकों को समझा रहा था। थोड़ी देर बाद उसने खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को संबेधित कर कहा– "हे महान वीरो! आइये, इस बात का ज़रा भी क्रोध नहीं है कि आपने मेरे अनुचरों को मार डाला। मैं चाहूँगा तो अपने तपोबल से उन्हें इसी क्षण जिला सकता हूँ। मगर इस जंगल में जंगली

युवकों की कोई कमी नहीं हैं, इसलिए मैं यह काम करना नहीं चाहता। क्या आप लोग मेरे दल में शामिल होकर झूठे वचन देनेवाले राजा का अंत करने में मेरी मदद कर सकेंगे? यदि आपने मदद दी तो धन, स्वर्ण और वाहनों के द्वारा आप का सत्कार करूँगा।"

पुजारी की बातें सुनकर खड्गवर्मा और जीवदत्त हँस पड़े। वे राक्षस हाथी के बीस पुट की दूरी पर ठहर कर बोले–"पुजारी, तुम अपने हाथी को वहीं पर रोक दो। हमें आपस में पहले ज़रूरी बातें करनी हैं।"

पुजारी ने हाथी के कुंभस्थल पर मुक्का मारा, हाथी रुक गया। जीवदत्त ने

हाथी की ओर एक बार ध्यान से देखा और पूछा–"पुजारी, राजा ने झूठा वचन क्या दिया? बताओ तो सही, हम भी जान लें!"

विघ्नेश्वर पुजारी ने अपने सपने का समाचार तथा राजा के द्वारा उसका अपमान इत्यादि सारा समाचार सुनाकर कहा–"इस वक़्त मैं जिस हाथी पर सवार हूँ, यह इन्द्र के वाहन ऐरावत का निकट रिश्तेदार है। इसकी उम्र एक हज़ार साल से ज़्यादा है। मैं इसकी मदद से आनंदपुर को जीतने जा रहा हूँ। आप अनावश्यक राजा की मदद करने जाकर मुसीबत में न फँस जाइयेगा। चाहे तो मेरे दल में शामिल हो जाइये। मुँह माँगी मुराद मिलेगी।"

पुजारी की बातों से खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को आश्चर्य के साथ संदेह भी हुआ। खड्गवर्मा राक्षस हाथी की ओर बढते हुए बोला–"क्या यह ऐरावत जाति का हाथी है? इसकी उम्र एक हज़ार साल की है? इसकी चाल देखने से लगता है कि अब तक यह दुधमुँहा बच्चा है।"

खड्गवर्मा के साथ जीवदत्त भी हाथी के निकट पहुँचा। वे उसकी सूंड पकड़कर जाँच करने लगे। उस वक़्त विघ्नेश्वर पुजारी ने हाथी के कुंभस्थल पर ज़ोर का मुक्का मारा। दूसरे ही क्षण हाथी ने ज़ोर से अपनी सूंड घुमाकर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को लपेट लिया। उसी समय जंगली युवक दल बाँध कर आये और उन्हें पकड़ लिया।

खड्गवर्मा और जीवदत्त इस हालत में अपने हाथ-पैर भी हिला नहीं सके। इस दृश्य को देख विघ्नेश्वर पुजारी ठठाकर हँसते हुए बोला–"इन दोनों को मैं गुफ़ा मंदिर में ले जाता हूँ। तुम लोग राजा नित्यानंद को पकड़ लाओ।"

जंगली युवक अट्टहास करते राजा नित्यानंद की ओर दौड़ पड़े। सारथी ने रथ को घुमाया। नित्यानंद ने अपने सैनिकों को जंगली युवकों का सामना करने का आदेश दिया। (और है)

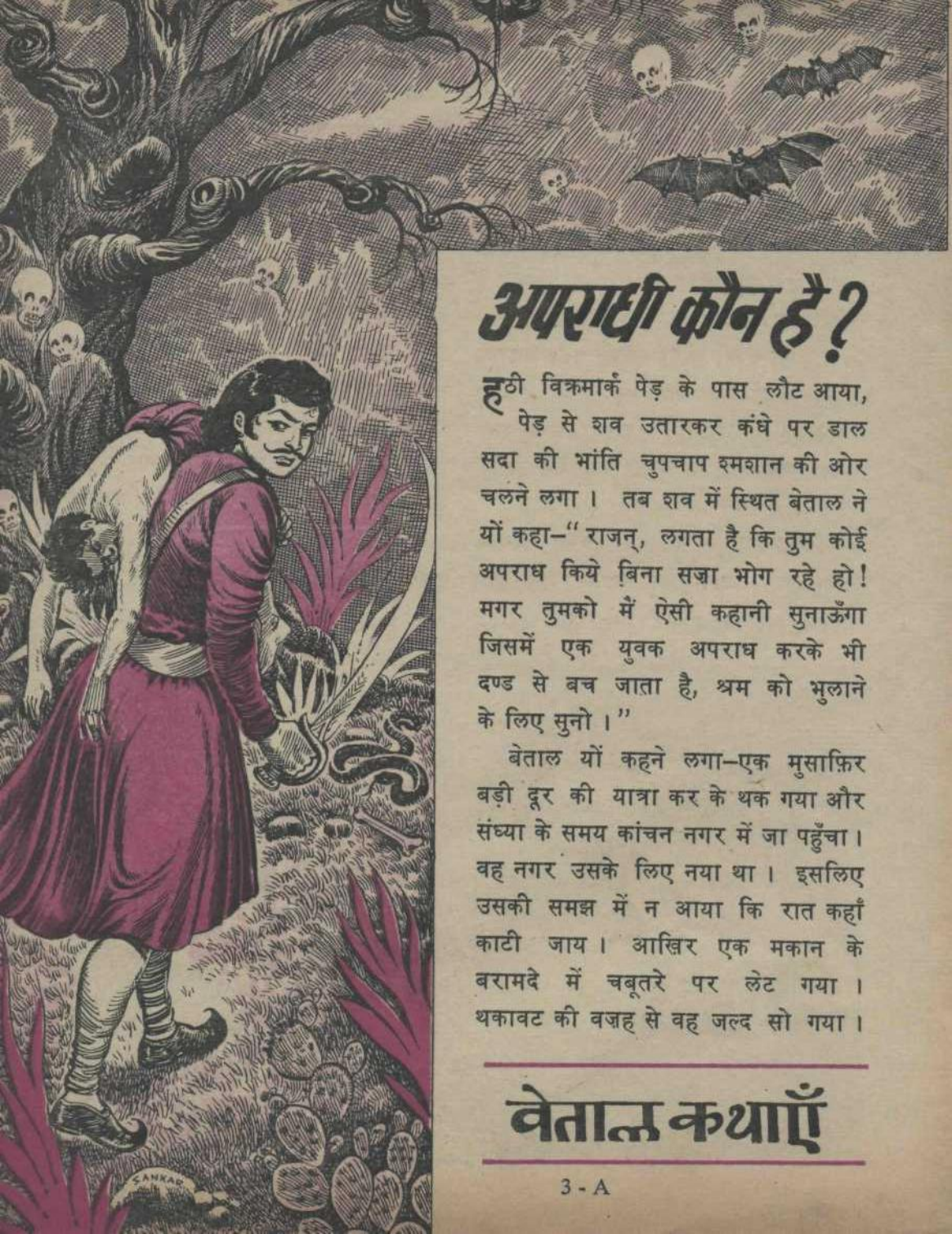


# अपराधी कौन है?

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा–"राजन्, लगता है कि तुम कोई अपराध किये बिना सज़ा भोग रहे हो! मगर तुमको मैं ऐसी कहानी सुनाऊँगा जिसमें एक युवक अपराध करके भी दण्ड से बच जाता है, श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा–एक मुसाफ़िर बड़ी दूर की यात्रा कर के थक गया और संध्या के समय कांचन नगर में जा पहुँचा। वह नगर उसके लिए नया था। इसलिए उसकी समझ में न आया कि रात कहाँ काटी जाय। आख़िर एक मकान के बरामदे में चबूतरे पर लेट गया। थकावट की वजह से वह जल्द सो गया।

थोड़ी देर बाद किसी के बात करने की आहट पाकर उसकी नींद खुल गयी। दो आदमी धीमी आवाज़ में बात कर रहे थे। मुसाफ़िर लेटे लेटे उनकी बातचीत सुनने लगा। मुसाफ़िर ने भांप लिया कि बातचीत करनेवालों में एक युवक है और दूसरा नगर का सिपाही है।

"देखो भाई, चोरी करना बड़ा अपराध है। तुमने इस छोटी-सी उम्र में यह अपराध क्यों किया? तुम राजा के दण्ड और नरक के भी भागी बन गये हो।" सिपाही ने कहा।

इस पर युवक ने जवाब दिया– "महाशय, आप का कहना सच है। लेकिन लाचार होकर मैंने यह अपराध किया है, इस बार मुझे क्षमा करके छोड़ देंगे तो मैं अपनी जिंदगी भर ऐसा काम न करूँगा।"

"तुमको चोरी क्यों करनी पड़ी? सच सच बता दो।" सिपाही ने पूछा।

युवक ने अपनी करुणापूर्ण कहानी यों सुना दी–मैं एक गरीब परिवार का हूँ। मेरा बाप मेरे बचपन में ही मर गया था। मेरी माँ अमीरों के घरों में छोटा-मोटा करके मुझे पालती रही। थोड़े रुपये इस तरह जमा हो गये। तब उसने मुसाफ़िरों को खाना बनाकर खिलाना शुरू किया। मुसाफ़िरों से जो कुछ मिलता, उसी से परिवार चलाती और मुझे पढ़ाने लगी। एक दिन की बात है। बड़ी रात

गये एक दंपति मेरे घर आया। उनके स्नान-पान का इंतज़ाम करके माँ ने उन दोनों के लिए अलग बढ़िया खाना बनाया। पति-पत्नी खा-पीकर उस रात को हमारे ही घर सो गये।

लेकिन दूसरे दिन सुबह हमने देखा कि वे दोनों मर गये थे। वैद्यों ने आकर उनकी जाँच की और बताया कि वे दोनों ज़हर के प्रयोग से मर गये हैं। पिछली रात को उन दोनों ने जो खाना खाया, उसमें थोड़े पदार्थ बच रहे थे। उनकी जाँच करने पर उसमें मरी हुई एक छिपकली दिखाई दी।

गल्ती तो मेरी माँ की थी, मगर माँ ने जान-बूझकर यह काम नहीं किया था। यह काम भूल से हो गया था। फिर भी यह खबर राजा तक पहुँची। राजा ने मेरी माँ को दरबार में बुला भेजा, आखिर उसे मौत की सज़ा सुनायी। दरबार के कुछ लोगों ने इस पर आपत्ति उठायी कि औरत को मौत की सज़ा न दे। क्योंकि उस औरत ने जान-बूझकर हत्या नहीं की, बल्कि भूल से हत्या हो गयी है।

राजा ने सोच-समझकर यह फ़ैसला सुनाया कि एक महीने के अन्दर दस हज़ार रुपये जुर्माना न चुकाये तो मेरी माँ को मृत्यु का दण्ड दिया जायगा।

मेरी समझ में नहीं आया कि इतनी भारी रक़म मैं कहाँ से लाऊँ! मैंने लकड़ी

काटकर बेचना शुरू किया। अपनी माँ को बचाने के लिए सब तरह की तक़लीफ़ें उठायीं। आज ही महीने का अंतिम दिन था। कल मेरी माँ को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाया जायगा। महीने भर मैंने जो मेहनत की, उसके जरिये सिर्फ़ एक सौ रुपये जमा कर सका। इसलिए लाचार होकर आज रात को मैंने चोरी की और आपके हाथों में पड़ गया।"

उस युवक की कहानी सुनते ही मुसाफ़िर का कलेजा पिघल उठा। सिपाही का दिल भी कसक उठा। उसने युवक से कहा–"भाई, सचमुच तुम भयंकर मुसीबत में फँसे हुए हो, लेकिन तुम्हारा चोरी करना बड़ी भारी भूल है। क्या कहीं कर्ज़ लेने की कोशिश नहीं की?"

"महाशय, आप ही बताइये, मुझे दस हज़ार रुपये क़र्ज कौन देगा? मैं वह क़र्ज कैसे चुका सकता हूँ?" युवक ने कहा।

"तुम किसी अमीर युवती तो शादी करते, तो तुम्हारी मुसीबत दूर होती!" सिपाही ने फिर पूछा।

"अमीर युवती की बात छोड़ दीजिये, मुझे गरीब लड़की भी सही, कौन देगा?" युवक ने दीनता भरी आवाज़ में कहा।

सिपाही थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब बोला–"जो हुआ, सो हो गया। फिर कभी ऐसा काम मत करो। मैं भी गरीब हूँ। मेरे भी कई कष्ट हैं। तुमने जो धन चुराया, उसमें से अपनी ज़रूरत भर के लिए रख दो, बाक़ी रुपये मुझे दे अपने रास्ते चलते बनो।"

ये बातें सुनते ही मुसाफ़िर को बड़ा क्रोध आया। सिपाही को चाहिये कि वह अपराधी को बन्दी बनाये, उसने अपराधी को छोड़ भी दिया, उल्टे चोरी के माल में हिस्सा भी लिया, यह कैसा बड़ा अपराध है!

दूसरे दिन मुसाफ़िर भी फ़ैसला सुनने दरबार में गया। लेकिन उसने सिपाही के अपराध के बारे में किसी से कुछ नहीं

कहा। युवक ने राजा को जुर्माना चुकाया और अपनी माँ को छुड़ा लिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा–"राजन, इसमें किसका अपराध बड़ा है? बड़ी रक़म जुर्माना लगानेवाले राजा का है, या चोरी करनेवाले युवक का? अथवा अपराधी से घूस लेकर हाथ लगे चोर को छोड़ देनेवाले सिपाही का है? या युवक तथा सिपाही के अपराधों को प्रत्यक्ष देखकर भी उन्हें प्रकट न करनेवाले मुसाफ़िर का है? हम यह मान भी ले कि मुसाफ़िर ने युवक की हालत पर रहम खाकर उसका अपराध प्रकट नहीं किया, किंतु सिपाही के अपराध को प्रकट क्यों नहीं किया? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा–"मुसाफ़िर सिपाही की करतूत पर क्रोध में ज़रूर आया, मगर उसने उसके अपराध को इसलिए प्रकट नहीं किया कि सिपाही के अपराध के साथ युवक का अपराध भी प्रकट हो जायगा। इसका नतीजा यह होगा कि युवक की माँ को फाँसी की सज़ा जरूर प्राप्त होगी। इसलिए उसे सिपाही के अपराध को युवक और उसकी माँ के वास्ते गुप्त रखना पड़ा। सिपाही भी अपराधियों के प्रति लापरवाह रहनेवाला तो नहीं है, क्योंकि उसकी दृष्टि में चोरी करना न केवल अपराध है बल्कि महान पाप भी है। युवक की कहानी सुनने पर उसने सोचा होगा कि उसके अपराध को क्षमाकर युवक के पाप में वह भी हिस्सा बांट ले। इसलिए राजा ही सबसे बड़ा अपराधी है, क्योंकि उसने खाना बनाकर बेचनेवाली एक अनाथा पर दस हज़ार रुपयों का जुर्माना लगाया। ऐसे राजा के शासन में धर्म और न्याय का अभाव ही होगा।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

# अंगरक्षक

एक राजा के लिए अंगरक्षक की जरूरत थी। उस काम के लिए कई युवक आगे आये। साहस और पराक्रम में दो ही युवक सफल निकले। उनमें से एक को अंगरक्षक के पद पर मंत्री ने नियुक्त करना चाहा।

मंत्री ने पहले एक को बुलाकर पूछा–"मान लो, राजा को दुश्मन उठा ले गये, तो तुम क्या करोगे?"

"दुश्मन पर युद्ध की घोषणा करके, युद्ध में उसको हराकर राजा को वापस लाऊँगा।" पहले ने जवाब दिया।

मंत्री ने दूसरे युवक से भी यही सवाल किया। "राजा के मेरे अंगरक्षक के होते मुझे मारे बिना दुश्मन राजा को कैसे ले जा सकता है?" दूसरे ने जवाब दिया।

इस पर मंत्री ने दूसरे को ही अंगरक्षक के पद पर नियुक्त किया।

# विद्यासागर

प्राचीनकाल में पाटलीपुत्र में विद्यासागर नामक एक ब्राह्मण युवक था। वह बचपन में ही वेद और शास्त्रों का अध्ययन करके बड़ा पंडित कहलाया। फिर भी उसकी विद्या की प्यास नहीं बुझी। उसने निश्चय किया कि उसे और भी सीखने के शास्त्र काफ़ी पड़े हुए हैं, उन शास्त्रों में भी उसे विद्वान बनना है।

यह निश्चय करके विद्यासागर देशाटन पर चल पड़ा। कई पंडितों से मिलकर चर्चा की, फिर भी उसे तृप्ति न हुई। क्योंकि सब उसकी दृष्टि में योग्य नहीं थे। इस लिए उसने यात्रा चालू की और एक पहाड़ की घाटी में जा पहुँचा। वह घाटी बड़ी सुंदर थी; थकावट की वजह से वह एक पीपल के नीचे लेटकर सो गया।

उस पेड़ पर एक ब्रह्मराक्षस रहता था। पेड़ के नीचे किसी ब्राह्मण युवक को सोते देख ब्रह्मराक्षस पेड़ से उतर आया और उस युवक को जगाया।

विद्यासागर जाग पड़ा तो देखता क्या है, उसके सामने एक विशाल आकृति का व्यक्ति खड़ा है। उसने पूछा–"महाशय, मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं? मैं पाटलीपुत्र का निवासी हूँ, मेरा नाम विद्यासागर है। मैंने वेद और शास्त्रों का अध्ययन किया है, फिर भी मेरे ज्ञान की प्यास बुझी नहीं है। मैं बहुत-कुछ सीखना चाहता हूँ, मगर अपने गाँव में कोई बड़े आचार्य नहीं हैं। इसलिए मैं अच्छे आचार्यों की खोज़ में देशाटन कर रहा हूँ।"

इस पर ब्रह्मराक्षस ने प्रसन्न होकर कहा–"बेटा, ज्ञान की पिपासा बहुत कम लोगों में पायी जाती है। जानने की बातें तो बहुत हैं। यदि तुम छे मास मेरे पास रहोगे तो तुम्हें मैं सारी विद्याएँ सिखा

राजीव सक्सेना

दूंगा।" विद्यासागर ने ब्रह्मराक्षस की बात बड़ी खुशी से मान ली।

इसके बाद ब्रह्मराक्षस पेड़ पर चढ़कर अपने स्थान पर बैठ गया। विद्या सागर उसके निचली डाल पर जा बैठा। छे मास तक विद्यासागर ने कई शास्त्र और मंत्र विद्याएँ सीख लीं और उन सब को उसने पीपल के पत्तों पर लिख लिया।

छे महीने समाप्त होते ही ब्रह्मराक्षस ने विद्यासागर से कहा–"बेटा, तुम्हें शिक्षा देकर मैं शाप से मुक्त हो गया हूँ। अब मैं पुण्यलोक में चला जाता हूँ। तुम अपने देश को लौटकर शास्त्र विधि से विवाह करो और यशस्वी पुत्रों का जन्म देकर सुखी रहो।" ये बातें कहकर ब्रह्मराक्षस अंतर्धान हो गया।

विद्यासागर ने सभी पत्तों को बाँध लिया, उस बण्डल को बगल में दबाये अपने देश की ओर चल पड़ा। जब वह कलिंग देश में पहुँचा, तब वह भूख-प्यास से थककर एक घर के सामने चबूतरे पर लेट गया और बेहोश हो गया।

वह घर मंदाकिनी नामक एक शूद्र स्त्री का था। वह रात को देर से जब घर लौटी तो उस युवक को सोते देख उसने जगाने की कोशिश की। मगर बोहोशी के कारण विद्यासागर होश में न आया।

मंदाकिनी ने विद्यासागर को घर में पहुँचवा दिया और वैद्य को बुला लाकर

जाँच करायी। विद्यासागर दीर्घ यात्रा तथा भूख-प्यास की वजह से एक दम कमज़ोर हो गया था। वैद्य की सहायता तथा मंदाकिनी परिचर्या के द्वारा वह एक महीने में अच्छी हालत में आ सका।

पूर्ण स्वस्थ होने पर फिर अपने देश को रवाना होते विद्यासागर ने मंदाकिनी से कहा–"मेरे घर से निकले बहुत समय हो गया है। तुमने मेरी जो सहायता की, वह भुलायी नहीं जा सकती। इसका फल तुम्हें ज़रूर मिलेगा।"

"मुझे इसका फल दिलाना तो आपके ही हाथों में है। मेरे साथ कई युवक विवाह करना चाहते थे, अब भी कई युवक मुझ से विवाह करने को तैयार हैं। मगर मैं उनमें से किसी को भी वर न पायी। आपको देखते हीं मेरे मन में आपकी पत्नी बनने की इच्छा पैदा हुई। इसलिए मेरी इच्छा की पूर्ति करके मुझ से विवाह कीजिये।"

इस पर विद्यासागर ने कहा–"मैं ब्राह्मण ब्रह्मचारी हूँ। तुम शूद्र कन्या हो। तुम्हारे साथ विवाह करने को धर्मशास्त्र नहीं मानता। यदि मुझे तुम्हारे साथ विवाह करना पड़े तो मुझे पहले एक ब्राह्मण कन्या, एक क्षत्रिय कन्या तथा एक वैश्य कन्या के साथ विवाह करना होगा। यही धर्मशास्त्र का नियम है। मैं इस नियम का उल्लंघन नही कर सकता। तुम्हीं बताओ कि मैं क्या करूँ?"

"इन सभी समस्याओं की पूर्ति करना तथा धर्म की रक्षा करना तो राजा का कर्तव्य है। मैं अपनी समस्या राजा से निवेदन करूँगी।" मंदाकिनी ने उत्तर दिया।

मंदाकिनी ने राजा के पास जाकर अपने विवाह की समस्या सविस्तार बता दी। राजा ने दरबार में विद्यासागर को बुला भेजा। विद्यासागर का पांडित्य और व्यवहार भी राजा को बहुत पसंद आया।

थोड़ी देर बात करने के बाद राजा ने कहा–"विद्यासागर बुद्धिमान है। मंदाकिनी की हालत पर विचार करने से वह विद्यासागर की पत्नी बनने की योग्यता रखती है। विद्या सागर भी उसकी इच्छा की पूर्ति करने को तैयार है। पर इस में बाधा यह पड़ती है कि उसे विद्यासागर को मंदाकिनी के साथ तीन और वर्णों की कन्याओं के साथ विवाह करना है। इसके लिए मैं एक उपाय बताता हूँ। हमारे मंत्री, मेरे तथा वैश्य कुलपति के भी विवाह करने योग्य कन्याएँ हैं। यदि विद्यासागर मंदाकिनी के साथ इन तीनों कन्याओं से विवाह करेगा तो धर्म की हानि न होगी।"

यह निर्णय सभी दरबारियों को उचित मालूम हुआ। तुरंत विवाह की तैयारियाँ शुरू हो गयीं।

एक अच्छे मुहूर्त में विद्यासागर ने चारों वर्णों की कन्याओं के साथ विवाह किया। उसने जिस ब्राह्मण कन्या के साथ विवाह किया, उसका नाम मालती था। क्षत्रिय कन्या का नाम कलावती और वैश्य कन्या का नाम सुमंगला था। मंदाकिनी विद्यासागर की शूद्र पत्नी थी।

इन चारों पत्नियों के साथ सुखपूर्वक गृहस्थी चलाते विद्यासागर ने कालक्रम में चार पुत्रों का जन्म दिया। ब्राह्मण पत्नी से वररुचि, क्षत्रिय पत्नी से विक्रमादित्य, वैश्य पत्नी से भट्टी तथा शूद्र पत्नी से भर्तृहरि पैदा हुए। ये चारों अपार ख्याति प्राप्त कर सके।

# सज्जनता का दण्ड

[ ३ ]

अत्तफ़ को गिरते देख एक दूसरा हिजड़ा दूर से भागता आया, अत्तफ़ को उठाकर उसके मुँह से टपकनेवाले खून को पोंछा, उसके कपड़ों पर लगी धूल को झाड़कर पूछा–"भाई साहब, तुमको क्या चाहिये?"

"यह काग़ज़ जफ़र के हाथ दो, मैं सिर्फ़ यही चाहता हूँ।" अत्तफ़ ने कहा।

जब वह हिजड़ा उस चिट्ठी को लेकर भीतर पहुँचा, तब जफ़र कई बड़े अफसरों के बीच बैठे शराब पीते, संगीत सुनते, दोस्तों की बातें सुन रहा था। उस वक़्त जफ़र खड़ा था और उसके हाथ में शराब का गिलास था। वह अत्तफ़ के बारे में ही बात कर रहा था।

मौक़ा देख हिजड़े ने झुककर वह चिट्ठी जफ़र के हाथ में थमा दी। जफ़र वह चिट्ठी पढ़कर खुशी से भर उठा और बेहोश हो धम्म् से नीचे गिर पड़ा। उसके हाथ का गिलास नीचे गिरकर कई टुकड़े हो गया। एक टुकड़ा जफ़र के भाल पर जा चुभा और खून बहने लगा।

हिजड़ा इस दृश्य को देख घबरा गया और भाग गया। जफ़र के दोस्तों ने उसे हाथों का सहारा दे खड़ा किया। उसका खून पोंछकर बोले–"ये कमबख़्त नौकर हमेशा ऐसी ही करतूत कर बैठते हैं। इस चिट्ठी को भेजनेवाले को नगररक्षक (वली) के पास भिजवाकर पाँच सौ कोड़े लगाकर क़ैद में डलवा देना चाहिए।"

चिट्ठी भेजनेवाले आदमी को पकड़ने के लिए गुलाम नौकर बाहर की ओर दौड़ पड़े। मगर अत्तफ़ ने इतमीनान से उनसे कहा–"यह चिट्ठी भेजनेवाला मैं

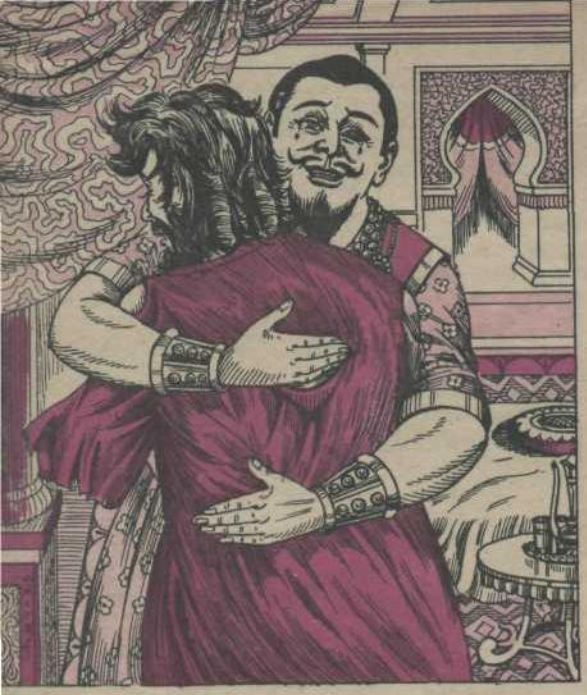

ही हूँ।" अत्तफ़ को गुलाम नौकर वली के पास ले गये, पाँच सौ कोड़े लगवाकर क़ैदखाने में डलवा दिया। उसके हाथों में जो हथकड़ियाँ लगा दी गयी थीं, उन पर लिखा था–"ज़िन्दगी भर की सज़ा।"

जफ़र जब होश में आया, तब उसने नौकरों से पूछा–"मुझे चिट्ठी भेजनेवाला आदमी कहाँ पर है? उस आदमी को तुरंत मेरे पास लाओ।" जफ़र ने नौकरों को आदेश दिया।

अत्तफ़ जब जफ़र के सामने आ खड़ा हुआ, तब वह उसे पहचान नहीं पाया। उसकी बुरी हालत ने उसे बिलकुल बदल डाला था।

"तुम किस गाँव के हो, भाई?" जफ़र ने पूछा।

"मैं दमस्कस का निवासी हूँ?" अत्तफ़ ने जवाब दिया।

"खास उसी शहर के हो या आसपास के किसी गाँव के निवासी हो?" जफ़र ने फिर पूछा।

"क्या तुमने कभी अत्तफ़ का नाम सुना है? दान देने में वह बहुत ही मशहूर है?" जफ़र ने फिर पूछा।

"अमुक गली के घर में उसके साथ आपकी दोस्ती हुई, यह बात मैं जानता हूँ। मैं यह भी जानता हूँ कि आप दोनों बगीचों में सैर करने गये थे। आप ने उसकी प्रेयसी के साथ शादी की। जब आप बग्दाद लौट रहे थे तब रास्ते में उसने आपको विदा किया, आपने जिस पात्र से शराब पी, उसी पात्र से उसने भी पी।" अत्तफ़ ने जवाब दिया।

"ये सारी बातें सही हैं, मगर विदा देने के बाद उसका क्या हुआ?" जफ़र ने पूछा।

"साहब, क्या बताऊँ, क़िस्मत ने उसका शिकार किया।" इस प्रकार अत्तफ़ ने अपनी सारी कहानी सुनाकर कहा–"जफ़र साहब! मैं ही वह अत्तफ़ हूँ।"

ये बातें सुनते ही जफ़र ज़ोर से चिल्ला पड़ा और अत्तफ़ को गले लगाया। दोनों

उस खुशी में थोड़ी देर के लिए इस दुनिया को ही भूल बैठे। फिर दोनों एक दूसरे के हाल-चाल जानते रहें।

इसके बाद जफ़र अत्तफ़ का हाथ पकड़कर गुस्लखाने में ले गया। स्नान के बाद आराम करके जफ़र अत्तफ़ को साथ ले खलीफ़ा के पास जा पहुँचा।

"सरकार, यही वह उदार अत्तफ़ है। दमस्कस में मैं इसका मेहमान रहा। इसने मुझे अपने प्राण से अधिक स्नेह दिया।" इन शब्दों के साथ जफ़र ने खलीफ़ा को अत्तफ़ का सच्चा परिचय कराया।

उस दुर्बल युवक को देख गहरी साँस लेकर खलीफ़ा ने पूछा–"भाई साहब, तुम इस बुरी हालत में कैसे फँस गये?"

अत्तफ़ ने रोते हुए अपनी सारी तक़लीफ़ें खलीफ़ा को कह सुनायीं। उसकी बातें सुनने पर खलीफ़ा और जफ़र दोनों रो पड़े।

अत्तफ़ की सारी कहानी सुनने के बाद खलीफ़ा ने जफ़र की ओर मुड़कर पूछा–"तुमने इससे कैसी कैसी सहायता ली? उसका पूरा ब्यौरा दो।"

"पहली बात तो यह है कि मैं ही खुद उसके ऋणी हूँ। उसका गुलाम हूँ मैं। उसके हाथ से मैंने नक़द तीन लाख दीनार लिये हैं। पुरस्कार के रूप में तो कई लाख दीनार लिये हैं। मेरे द्वारा उसके ऋण को चुकाने तक वह यहीं रहकर हमें खुश करें। अब रही, उसकी पत्नी की बात! यह बात गुप्त रूप से करनी है।" जफ़र ने खलीफ़ा को समझाया।

खलीफ़ा ने समझ लिया कि अत्तफ़ और जफ़र को गुप्त रूप से कोई बात करनी है, तब उसने दोनों को घर भेज दिया।

अत्तफ़ को अपने घर ले जाते हुए जफ़र ने रास्ते में बताया–"भैया! तुम्हारी जान से प्यारी तुम्हारी औरत को मैंने

छुआ तक नहीं। उसके साथ शादी करने के बाद मैंने उसके चेहरे तक भी नहीं देखा। मैंने उसे तलाक भी दे दिया है, तुम फिर उसको स्वीकार करो।"

इस तरह अत्तफ़ फिर अपनी पत्नी को पा सका।

खलीफ़ा का आदेश मिलते ही दमस्कस के शासक को बन्दी बनाकर अंधेरी कोठी में ढकेल दिया गया।

जफ़र की दोस्ती, खलीफ़ा का परिचय पाकर अत्तफ़ अपनी पत्नी के साथ बगदाद में कई महीने आराम से रहा। वह ज़िंदगी भर वहीं रहना चाहता था, मगर दमस्कस से उसके मित्र व रिश्तेदारों ने ढेरों चिट्ठियाँ भेजीं कि वह पत्नी के साथ दमस्कस लौट आवे। अत्तफ़ का दमस्कस में जाना खलीफ़ा को भी पसंद न था। लेकिन जब अत्तफ़ ने खलीफ़ा की माँग पर दमस्कस के नगर रक्षक (वली) का पद स्वीकार किया, तब खलीफ़ा ने उसके साथ बड़े परिवार को, अनेक ऊँट, खच्चर तथा अपार पुरस्कार देकर भेज दिया।

जब अत्तफ़ दमस्कस पहुँचा तब उसके स्वागत के लिए सारा शहर दीपों तथा तरह-तरह के अलंकारों के साथ जगमगा रहा था। अत्तफ़ से प्यार करनेवाले गरीब उसके लौटते देख उसके जाते समय जैसे रो पड़े थे, अब वे उतने ही खुश हो उठे।

खलीफ़ा ने नगर के रक्षक को मौत की सज़ा सुनायी थी, मगर अत्तफ़ ने खलीफ़ा से निवेदन कर उसे ज़िंदगी भर कारागार की सज़ा में बदलवा दी।

खलीफ़ा एक रात को पढ़ते हुए हँसकर जो रोया था, उस पुरानी पुस्तक की बात क्या है? खलीफ़ा तो यह बात बिलकुल भूल गया था। जफ़र को लौटते देख उस खुशी में खलीफ़ा उन पुरानी बातों को बिलकुल भूल गया था। जफ़र ने फिर कभी भूल से भी उस किताब की बात नहीं उठायी, तो हमें उस क़िताब से क्या मतलब?

(समाप्त)

# परिवर्तन

मणिपुर राज्य पर एक वृद्ध राजा शासन करता था। उसके वंश में मंदारवल्ली नामक उसकी इकलौती पोती रह गयी थी। अपने दादा के जीवन काल में ही उस कन्या का राज्याभिषेक हुआ।

एक दिन वृद्ध दादा ने अपनी पोती से पूछा–"बेटी, तुम शादी करके संतानवती बन जाओ, वरना तुम्हारे साथ हमारे वंश का अंत हो जायगा।" वास्तव में मंदारवल्ली विवाह करना नहीं चाहती थी। कोई एक पुरुष उसका पति बनकर उस पर अधिकार करे, यह कतई उसे पसंद न था।

उसने अपने दादा से कहा–"दादा, वंश की लता को आगे बढ़ाने के लिए किसी भी पुरुष के साथ विवाह किया जा सकता है न?" इस प्रकार मंदारवल्ली ने अपने दादा को समझाकर अपने दरबार के एक मामूली व्यक्ति से विवाह किया।

नाम के वास्ते वह आदमी रानी का पति था, मगर उसके लिए दरबार में कोई पदन था। वह वक़्त पर खाता और बाक़ी समय क़िले में कहीं पड़ा रहता।

रानी मंदारवल्ली ने कुछ समय बाद एक लड़की का जन्म दिया। उस शिशु का नाम मंदारमाला रखा गया। मंदारमाला के पैदा होने के कुछ समय बाद रानी मंदारवल्ली का दादा मर गया। मरने के पहले उसने मंदारवल्ली को बुलाकर कहा–"बेटी, तुम्हारी पुत्री के युक्त वयस्का होने पर उसका विवाह करो, शायद उसके गर्भ से राज्य का कोई वरिस पैदा हो जाय।"

मंदारमाला जब युक्तवयस्का हुई तब अड़ोस-पड़ोस के युवराजा उसके साथ विवाह करने को आगे आये। कुछ राजकुमारों ने मंदारवल्ली के पास दूत भी भेजे। लेकिन मंदारवल्ली ने उन दूतों का अपमान करके

ममता अग्रवाल

वापस भेज दिया। उसका विचार था कि उसकी पुत्री भी किसी अयोग्य के साथ विवाह करके रानी बनी रहे और उसका पति उसका गुलाम रहे।

यह बात मदुरा नगर के युवराज मकरंद को मालूम हुई। वह एक साधारण व्यक्ति का वेष धरकर मणिपुर में पहुँचा। राजमहल के द्वारपाल से कहा–"मैं महारानी के दर्शन करना चाहता हूँ।"

रानी की आज्ञा पाकर मकरंद को भटों ने रानी के सामने उपस्थित किया।

"तुम्हें क्या चाहिए?" मंदारवल्ली ने मकरंद से पूछा।

"मैं राजकुमारी के साथ विवाह करने की इच्छा को लेकर आया हूँ।" मकरंद ने कहा।

"तुम्हारा क्या नाम है? तुम किस देश के निवासी हो?" रानी ने फिर पूछा।

"महारानी जी, मैं एक क्षुद्र व्यक्ति हूँ, मैं जहाँ रहूँगा, वही मेरा देश है।" मकरंद ने जवाब दिया।

मकरंद सुंदर था। इसलिए रानी ने सोचा कि इस क्षुद्र व्यक्ति के साथ उसकी पुत्री ज़रूर विवाह करेगी। उसने मकरंद से कहा–"तुम्हारे साथ युवरानी का विवाह करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन पहले मैं तुमको एक बात साफ़ बता देना चाहती हूँ। युवरानी मेरे बाद महारानी होनेवाली है। तुम्हें ज़िंदगी-भर उसके साथ विनय दिखानी होगी। यह सोचकर तुम उस पर कोई अधिकार नहीं चला सकते

कि तुम उसके पति हो।" मकरंद ने इस तरह सर हिलाया, मानों महारानी की बातें समझ गया हो। इसके बाद मंदारमाला का विवाह निश्चय हुआ।

मंदारमाला के पिता ने गुप्त रूप से उसे समझाया–"बेटी, तुम इस विवाह के लिए अपनी स्वीकृति न दो। तुम अपने से असमर्थ व्यक्ति के साथ कभी सुख भोग नहीं सकती। तुम्हारी माँ मूर्खा बन कर ठूँठ की तरह ज़िंदगी बिता रही है। वह चाहती है कि तुम्हारी भी ज़िंदगी बरबाद हो जाय।"

इसके बाद मंदारमाला अपने होनेवाले पति से एकांत में मिलकर बोली–"तुम मेरे साथ विवाह करके सुखी नहीं बन सकते। असमर्थ पति को कोई भी युवती प्यार नहीं कर सकती। तुम से भी बड़े ओहदेवाली पत्नी से तुम कैसे सुखी बन सकते हो?"

इस पर मकरंद ने हँसकर कहा–"मैं अपनी बात खुद सोच लूँगा। मै समझता हूँ कि तुम्हारे प्रेम को मैं प्राप्त कर सकूँगा। मैं तुम्हारे साथ विवाह करने के लिए दूर से आया हूँ। अब मेरी इच्छा की पूर्ति होने जा रही है, तुम इसमें बाधा न डालो, बल्कि निश्चिंत रहो।"

मंदारमाला ने सोचा कि मकरंद के साहस का कोई उचित कारण होगा।

निश्चित समय पर मंदारमाला और मकरंद का विवाह संपन्न हुआ। सब के

देखते हुए मकरंद ने मंदारमाला का हाथ पकड़कर कहा–"अब चलो मेरे साथ" ये शब्द कहते वह अपने निवास की ओर बढ़ा। रानी मंदारवल्ली क्रोध में आकर अपने सिपाहियों से बोली–"उसे रोको।"

मकरंद ने झट एक सिपाही के हाथ से तलवार छीनकर कहा–"सावधान, यदि किसी ने मुझे रोकने की कोशिश की तो उसका सर काट डालूंगा।"

सिपाही सब पीछे हट गये।

मकरंद ने मंदारवल्ली की ओर घूमकर कहा–"मैं तुम्हारे पति की तरह असमर्थ नहीं हूँ कि तुम्हारा खाना खाकर कुत्ते की तरह दुम हिलाते पड़ा रहूँ।"

मंदारवल्ली ने अपनी पुत्री की ओर मुड़कर कहा–"अरी, यह कमबख्त बकता जा रहा है तो तुम चुप क्यों हो?"

"यदि मेरे पति पराक्रमी हैं तो मैं क्यों आपत्ति उठाऊँ? क्या तुम यह सोचती हो कि तुम्हारे पति अयोग्य हो तो तुम्हें लज्जा नहीं, इसलिए मुझे भी लज्जा नहीं है?" मंदारमाला ने अपनी माँ से कहा।

यह सारा दृश्य देखनेवाले मंदारवल्ली के पति तलवार खींचकर मकरंद के सामने आकर बोला–"तुमने मेरी पत्नी का अपमान किया, इसलिए तुम्हें इसका मज़ा चखाता हूँ।" ये शब्द कहते वह युद्ध के लिए तैयार हो गया।

मकरंद उसके साथ युद्ध करके जान-बूझ कर हार गया। मंदारवल्ली के पति के पराक्रम की सब लोग प्रशंसा करने लगे, तब उसे लगा कि वह भी मन ही मन अपने पति का अभिनंदन कर रही है। इस नये अनुभव के साथ उसमें एक विचित्र परिवर्तन हुआ। अपार प्रेम का उदय हुआ। अपनी बेटी के लिए योग्य तथा पराक्रमी पति के मिलने पर उसे बड़ी प्रसन्नता भी हुई। जब मंदारवल्ली को मालूम हुआ कि मकरंद कोई अयोग्य नहीं है, बल्कि मदुरा का युवराजा है, तब मंदारवल्ली की प्रसन्नता की सीमा न रही।

# बल्लू का गधा

एक जमाने में विजयनगर में एक प्रसिद्ध ज्योतिषी रहा करता था। उसने ज्योतिषशास्त्र के सभी ग्रन्थों का अध्ययन किया था। इसलिए अनेक राजा उसकी सलाह लेकर ही कोई महत्वपूर्ण कार्य किया करते थे। ज्योतिषी ये सारी बातें स्पष्ट कह देता था कि कब किन किन के बीच युद्ध होगा और उनमें कौन विजयी होगा, कौन हार जायगा। शायद कभी उस ज्योतिषी की बात झूठ निकली हो, पर किसी के मुँह से ऐसी बात कभी सुनी नहीं गयी।

ज्योतिषी को खेतीबाड़ी बहुत पसंद थी। फ़सल की कटाई के वक़्त वह ज़रूर अपने गाँव पहुँच जाता, निकट रहकर काम करवाता।

एक दिन ज्योतिषी खलिहान में अपने अनाज के ढ़ेर लगवा रहा था। उस वक़्त उस गाँव का धोबी बल्लू गधे को हाँकते उधर से आ निकला। उसने ज्योतिषी को देख कहा–"आप तो अनाज जल्दी बोरों में भरवाकर घर पहुँचवा दीजिये। थोड़ी देर में बड़ा तूफ़ान आनेवाला है।"

ज्योतिषी ने हँसकर कहा–"अरे बुद्धू, इस वक़्त तूफ़ान कैसे आ सकता है? सूरज तो अभी अमुक राशि में है। दक्षिणी पवन चल रहा है। आसमान में कहीं अंधकार के बादल भी मण्डरा नहीं रहे हैं। बरसात की सूचना देनेवाले ग्रह भी तो नहीं हैं।" ज्योतिषी ने कहा।

"साहब, मैं ग्रह और नक्षत्रों की बात क्या जानूँ? बस मैं इतना जानता हूँ कि सूरज के डूबने तक बड़ी आंधी-वर्षा होनेवाली है। आपको नुक़सान होगा, इसलिए मैं सावधान कर रहा हूँ।" ये शब्द कहते बल्लू अपने घर चला गया।

राजीव कुमार

"यह तो निरे गँवार हैं। शास्त्र की बात यह क्या जाने? इस वक़्त पानी बरसाना तो इन्द्रदेव के लिए भी मुमक़िन नहीं है।" ज्योतिषी ने खलिहान में काम करनेवाले मजदूरों से कहा।

मगर सूरज के डूबते समय ऐसी ज़ोर की हवा चली कि घरों की खपरैलवाली छतें उड़ने लगीं; बड़े-बड़े पेड़ भी जड़ों से उखड़ गये। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगे। थोड़ी देर में मूसलधार वर्षा होने लगी।

खेतों में काम करनेवाले किसान और मजदूर जहाँ-तहाँ काम छोड़कर घर भाग गये। ज्योतिषी यह सोचकर पछताने लगा कि धोबी की बात पर ध्यान दिया होता तो यह नुक़सान न हुआ होता। सारे शास्त्रों का अध्ययन करके भी मैं तूफ़ान के होने की बात न समझ पाया। मगर यह धोबी बल्लू कैसे जान सका? उसने खुद यह बात कही न होगी। किसी ने उसे यह बात बतायी होगी। ये बातें बतानेवाले कोई बड़े पंडित हैं। मुझसे भी अच्छा शास्त्रज्ञान रखनेवाले होंगे। बल्लू से पूछकर उनका परिचय प्राप्त कर लेना चाहिए। ज्योतिषी ने मन में यह निश्चय कर लिया।

दूसरे दिन सवेरे आंधी और वर्षा थम गयी। तब ज्योतिषी सीधे धोबी के घर पहुँचा और पूछा–"अरे बल्लू! जैसे तुमने कहा, आंधी और वर्षा हो गयी। यह बात

तुम खुद जान नहीं सकते! किसी ने तुम्हें बतायी होगी। बताओ, किसी ने तुम्हें यह सूचना दी?"

"आपका कहना सच है, साहब! तूफ़ान होने की बात मुझे अपने गधे ने बतायी। तूफ़ान होने के पहले वह अपनी पीठ को धनुष की भांति झुकाकर, रोंगटे खड़े कर देता है और अपनी पूँछ को पैरों के बीच सिकोड़कर काँपने लगता है। कल मेरे गधे ने ठीक ऐसे ही किया। इसलिए मैं आपसे बता सका कि तूफ़ान आनेवाला है।"

"अरे बल्लू! सारे शास्त्रों का ज्ञान रखनेवाला मैं जिस बात को समझ न पाया, वह बात गधा जानता है, इस पर मैं यक़ीन नहीं कर पाता हूँ।" ज्योतिषी ने कहा।

"साहब, आप भी क्या कहते हैं? सवेरा होने के एक पहर पहले क्या मुर्गा बांग नहीं देता? सुनते हैं कि समुद्र में ज्वार उठने के पहले पानी के घोड़े नावों के चारों तरफ़ उछलते हैं। यदि कोई पूछे कि उन्हें ज्वार की बात कैसे मालूम होगी तो हम क्या जवाब दे सकते हैं?" बल्लू ने कहा।

ज्योतिषी ने गहरी साँस लेकर कहा– "अच्छी बात है! तुम यह बात किसी से मत कहो, वरना मेरी इज़्ज़त मिट्टी में मिल जायगी।"

"साहब, मैं आपकी इज़्ज़त मिट्टी में क्यों मिलाऊँगा? इससे मुझे आता-जाता क्या है?" बल्लू ने समझाया।

फिर भी ज्योतिषी की इज़्ज़त धूल में मिल ही गयी। खलिहान में ज्योतिषी और बल्लू की बातचीत जिन मज़दूरों ने सुनी, उन लोगों ने इस बात का खूब प्रचार किया। इसीलिए जब तब उस गाँव में ज्योतिषी के साथ किसी का झगड़ा हो जाता तो वे लोग झट कहा करते थे– "तुम अपने को बल्लू के गधे जैसे बुद्धिमान समझते हो। अब चुप रह जाओ।"

इस कारण से यह कहावत प्रचालित हो गयी कि पढ़े-लिखे की अपेक्षा धोबी कहीं अच्छा बुद्धिमान होता है!

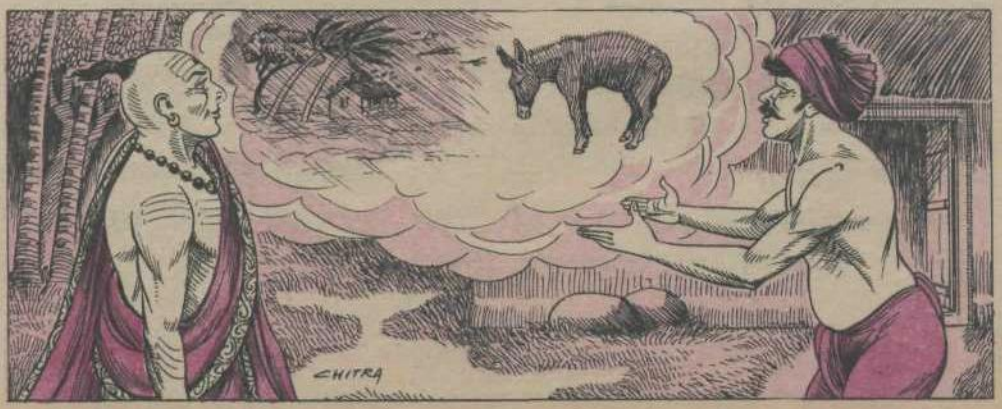

# पोषित पुत्र

एक जंगल के पास छोटा-सा गाँव था।

उस गाँव के छोर पर एक बुढ़िया अपने बेटे के साथ रहा करती थी। बुढ़िया रोज़ जंगल में जाती, बरगद के पत्ते लाती, पत्तल बनाकर बेच देती। इससे जो कुछ मिलता, उसी से अपने और अपने बेटे का गुज़ारा करती थी।

बुढ़िया का बेटा आवारा था। वह माँ की बिलकुल मदद नहीं करता था, उल्टे पैसों के लिए माँ को तंग करता था। माँ खीझकर उसकी बिल्कुल परवाह न करती थी, आखिर वह आवारा भी ऊबकर घर से भाग गया।

बुढ़िया धीरे धीरे कमज़ोर होती गयी। एक दिन जंगल में पत्ते तोड़ते लू लगने के कारण वह बेहोश हो गयी।

उसी समय उधर से एक युवक आ निकला। उसने बूढ़ी को बेहोश देखा, तुरंत पास के झरने में से पानी लाकर बूढ़ी के चेहरे पर छिड़का दिया। बूढ़ी होश में आ गयी।

बूढ़ी उठ बैठी। पास में एक युवक को देख पूछा–"बेटा, तुम कौन हो?"

"बुढ़िया माई, मेरे अपना कहनेवाला इस दुनिया में कोई नहीं है। मैं काम की खोज़ में इधर-उधर भटक रहा हूँ।" युवक ने जवाब दिया।

बूढ़ी उठकर पत्तों का बण्डल उठाने को हुई। युवक ने बूढ़ी को रोक कर वह बण्डल अपने सर पर उठाया और कहा–"बूढ़ी माँ, चलो, मैं इसे तुम्हारे घर पहुँचा देता हूँ। इस बुढ़ापे में तुम ऐसी मुसीबत क्यों झेलती हो?"

घर पहुँचने पर बूढ़ी ने युवक से कहा–"बेटा, तुम्हें कहीं नौकरी मिलने तक मेरे ही घर रहो।"

दर्शनलाल बाफना

युवक बूढ़ी के घर रह गया। उस दिन से वह हर काम खुद करने लगा। बूढ़ी सिर्फ़ जड़ी-बूटी के वास्ते कभी जंगल में जाया करती, युवक लकड़ी तोड़ लाता, बेचकर पैसे बूढ़ी के हाथ सौंप देता। इस तरह दोनों अपनी शक्ति भर कमाते गये। खर्चा काटकर थोड़ा-बहुत बचने भी लगा।

एक दिन बूढ़ी का बेटा कहीं से अचानक आ टपका। वह समझ गया कि अब घर की हालत सुधर गयी है। उसने फिर अपनी माँ को तंग करना शुरू किया, माँ ने एक भी कौड़ी उसे देने से साफ़ इनकार किया।

इस वजह से बूढ़ी का असली बेटा पालतू बेटे से झगड़ने लगा। उसका विश्वास था, किसी भी उपाय से पालतू बेटे को अपने घर से भगा दे, तो उसकी माँ उस से फिर प्यार करने लग जायगी।

एक दिन दोनों युवक कहीं बाहर गये हुए थे। तब बूढ़ी ने सारे रुपये एक पोटली में बाँधकर कहीं छिपा दिया। घर के बर्तन-भांड़े छितर-बितर करके रोते बैठ गयी। थोड़ी देर बाद बूढ़ी का असली बेटा आ पहुँचा। बूढ़ी ने उसे बताया कि चोरों ने घर के सारे रुपये चुरा लिये हैं।

"तुम तो बड़ी पापिन हो। रुपये माँगने पर मुझे नहीं दिया। तुम्हें उचित दण्ड मिल गया। तुम्हारा चेहरा देखने से भी पाप लगता है। मैं तुम्हारे घर अब एक पल भी न रहूँगा।" इस तरह बूढ़ी को खरी-खोटी सुनाकर उसका बेटा कहीं चला गया।

इस बीच पालतू बेटा भी घर आ पहुँचा। उसने सारी हालत देखी, बूढ़ी के बेटे के चले जाने पर उसने समझाया– "बूढ़ी माँ, रोओ मत! चोरी हो गयी तो कोई बात नहीं। हमने जो कमाया, वही तो चोरी गया। फिर कमा लेंगे।"

"रुपये कहाँ गये, बेटा? रुपये तो सुरक्षित हैं। वह कमबख्त चला गया, अच्छा ही हुआ।" ये शब्द कहते बूढ़ी ने कहीं से रुपयों की पोटली बाहर निकाली।

# फूलों की बदबू!

एक मछियारिन मछली बेच कर घर लौट रही थी। बीच रास्ते में अचानक जोरों की वर्षा हुई। मछियारिन भीग गयी और सर्दी से कांपते हुए एक घर के चबूतरे पर जा खड़ी हुई। उस घर में फूल बेचनेवाली एक औरत रहती थी। उसने मछियारिन को अन्दर बुलाया, पहनने के लिए सूखे कपड़े दिये, खाना खिला कर सोने की जगह दिखलायी। मछियारिन बहुत खुश हुई। वह फूल रखनेवाले कमरे के बाजू में लेट गयी।

मछियारिन को फूलों की बास अच्छी न लगी, उसके पेट में मचलन होने लगी। इस वजह से उसे नींद नहीं आयी, तब वह उठ कर चली गयी और अपनी मछलियों की टोकरी लाकर सिरहाने रख कर फिर लेट गयी। इस बार मछलियों की खुशबू से उसे अच्छी नींद लगी और वह मजे से सो गयी।

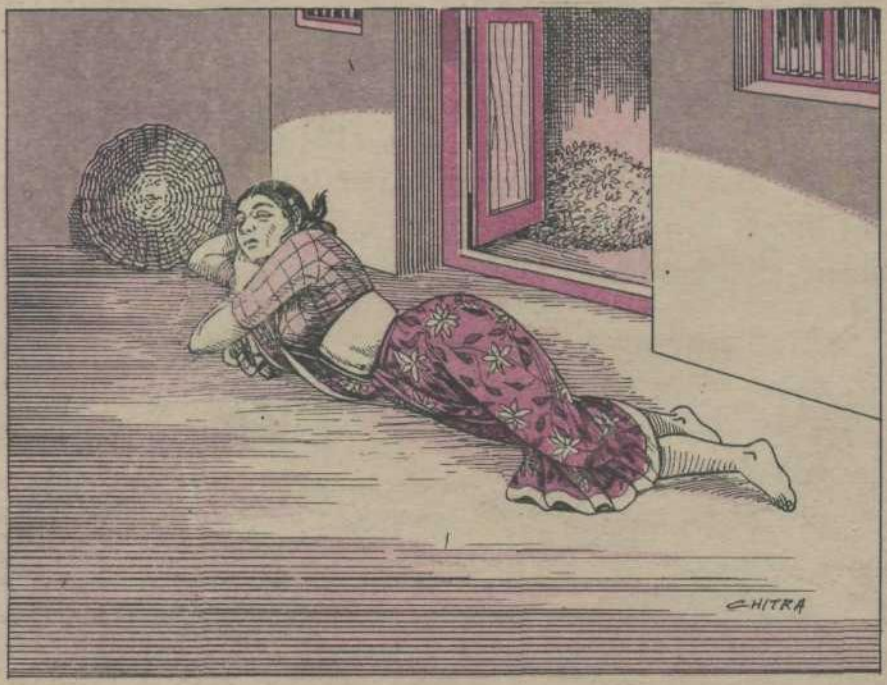

# सच्चा न्याय

एक गाँव में एक गरीब आदमी था।

उसके मन में करोड़पति बनने की बड़ी इच्छा थी। लेकिन ज़िंदगी-भर वह मेहनत करके सिर्फ़ सोने के दो दीनार बचा सका। मरते वक़्त उसने अपने बेटे को बुलाकर कहा–"बेटा, ज़िन्दगी भर मैंने करोड़पति बनने के सपने देखे। लेकिन बड़ी मेहनत करके भी मैं दो दीनारों से ज़्यादा बचा नहीं पाया। मेहनत करना छोड़ मैं कुछ और जानता न था। तुम तो पढ़े-लिखे हो। मैंने जो दीनार बचाये उनसे व्यापार करके तुम भी सही, करोड़पति बन जाओगे तो स्वर्ग में मेरी आत्मा को शांति मिलेगी।"

उस गरीब आदमी के लड़के का नाम श्रीमान था। उसने संकल्प किया कि उसके पिता की इच्छा पूरी करके अपने नाम को भी सार्थक बनाना चाहिए। फिर क्या, अपने उन दो दीनारों से अपने ही गाँव में व्यापार शुरू किया और धीरे-धीरे थोड़ा-बहुत कमाने लगा।

कुछ दिन बाद उसका व्यापार एक स्तर पर पहुँचा और व्यापार की बढ़ती रुक सी गयी। उस हालत में श्रीमान राजधानी नगर में पहुँचा। वहाँ अपना व्यापार चालू करके खूब धन कमाने लगा।

एक समय उस प्रदेश में अकाल पड़ा। अनाज दूर दूर के प्रदेशों से मँगाया जा रहा था। गरीब लोग अमीरों से अधिक ब्याज पर उधार लेकर घर-द्वार गिरवी रखने लगे। गरीबों की यह हालत देख श्रीमान का दिल पिघल गया। उसने व्यापार करना छोड़ दिया और अपने धन गरीबों को कम ब्याज पर उधार देने लगा। कंगालों को तो वह बिना ब्जाज के ही उधार देता था। यह बात अन्य व्यापारियों को पसंद न आयी। उन

दिनेश कुमार

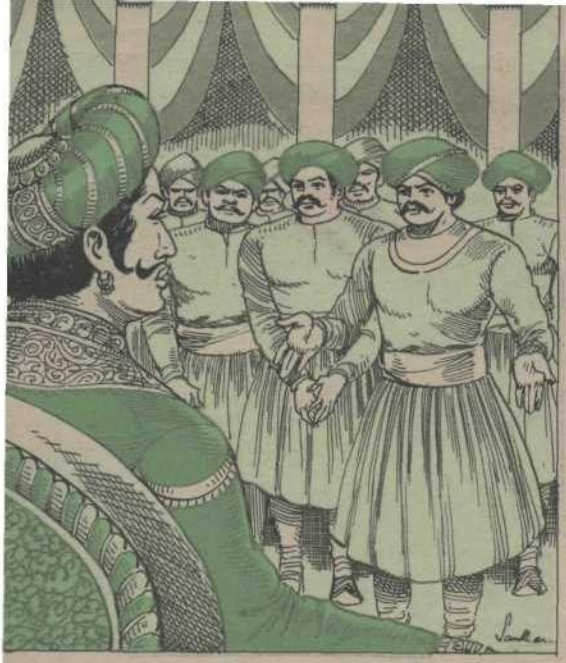

लोगों ने सोचा कि उससे ज़्यादा रक़म कम ब्याज पर लेकर उसका हाथ खाली करे। यह सोचकर धनी लोग भी उसके पास बड़ी रक़म उधार लेने आ पहुँचे। मगर श्रीमान ने उन लोगों से अधिक ब्याज माँगा।

व्यापारियों ने राजा के पास जाकर शिकायत की–"महाराज, कुछ साल पहले हमारे शहर में श्रीमान नामक एक व्यापारी आया। व्यापार करके वह बड़ा धनी बन बैठा है, लेकिन वह कई तरह से ब्याज वसूल करता है, किसी से कम, और किसी से ज़्यादा। यह तो न्याय के विरुद्ध है। इसलिए आप उस दुष्ट का फ़ैसला करके उसे दण्ड दीजिए।"

मगर राजा ने जल्दबाजी में आकर उस शिकायत पर कोई कार्रवाई नहीं की। वह एक अमीर का वेष धरकर श्रीमान के घर गया और बड़ी रक़म उधार माँगी। श्रीमान ने उससे ज़्यादा ब्याज माँगा, इस पर राजा ज़्यादा ब्याज देने से इनकार करके लौट आया।

दूसरे दिन श्रीमान को राजदरबार से बुलावा आया। राजा ने उस से पूछा–"तुम ब्याज का व्यापार करते हो, तुम्हें सब लोगों से समान रूप में न्याज लेना है, लेकिन तुम पक्षपात दिखाते हो। व्यापार में ऐसा पक्षपात दिखाना न्याय के विरुद्ध है। तुम पर जब शिकायत आयी, तब मैंने विश्वास नहीं किया, सच्ची बात जानने के लिए मैं वेश बदल कर तुम्हारे पास आया और तुम से उधार माँगा। तुमने मुझ से ज़्यादा ब्याज माँगा। मैंने सुना है कि कई लोगों को तुमने बिना ब्याज के ही उधार दिया है। तुम इसका क्या उत्तर देते हो?"

"महाराज, यह बात सच है कि मैं सब से एक समान ब्याज नहीं लेता, लेकिन इसमें पक्षपात या अन्याय बिलकुल नहीं है। कोई यदि ध्यान से विचार करे तो मेरे उद्देश्य का पता चल जायगा।" श्रीमान ने जवाब दिया।

राजा ने श्रीमान को भेज दिया, तब बड़ी देर तक अपने मंत्रियों के साथ परामर्श किया, मगर किसी की समझ में यह न आया कि श्रीमान की करनी अन्याय क्यों नहीं है! एक ही चीज़ का दाम दस लोगों को अलग अलग बताना व्यापार के नियम के विरुद्ध न हो तो क्या होगा! मंत्री भी इस समस्या को सुलझा नहीं पाये।

अंत में राजा ने कहा–"श्रीमान तो अपने कार्य को अन्याय नहीं मानता है, जो व्यक्ति यह बतायेगा कि उसका कहना न्याय है, उसे मैं मुँह माँगा पुरस्कार दूँगा।"

राजा के इकलौती पुत्री थी। श्रीमान जब दरबार में आया, तब राजकुमारी ने उसे देख लिया था। उसकी बातचीत का ढंग और उसके व्यवहार ने राजकुमारी को आकृष्ट किया।

राजकुमारी ने राजा से कहा–"पिताजी, मैं यह साबित कर सकती हूँ कि श्रीमान का कार्य अन्यायपूर्ण नहीं है। मैं जो माँगू, सो आप दे सकते हैं?"

"जब मैंने कहा कि किसी को भी दे सकता हूँ, तब तुम्हें क्यों नहीं दे सकता, बेटी?" राजा ने कहा।

"तब तो सुन लीजिये। आप से जिन लोगों ने श्रीमान की शिकायत की, वे सब इस अकाल के समय ज़्यादा ब्याज वसूल करनेवाले ही हैं। उन लोगों ने श्रीमान से कम ब्याज पर उधार लेकर गरीबों को अधिक ब्याज पर उधार देने का प्रयत्न किया है। श्रीमान ने सोचा कि उसके धन से धनी लोग लाभ न उठावे। यह भी तो व्यापार का धर्म है।" राजकुमारी ने समझाया। राजकुमारी की बात राजा को उचित मालूम हुई।

"अच्छी बात है, तब तो तुम माँग लो, क्या चाहती हो?" राजा ने पूछा।

"श्रीमान के साथ मेरा विवाह कीजिये।" राजकुमारी ने कहा।

राजा ने अपने वचन के अनुसार राजकुमारी का विवाह श्रीमान के साथ किया।

# बढ़िया आँख

एक बार एक अंधे और एक लंगड़े आदमी को साथ मिल कर यात्रा करनी पड़ी। लंगड़ा अंधे के कंधों पर बैठ कर अंधे को रास्ते बताने लगा।

थोड़ी दूर जाने पर लंगड़े ने कहा–"यहाँ पर कटहल का बगीचा है। पेड़ों पर कटहल लगे हैं।"

"बगीचे के लिए बाड़ा लगा है?" अंधे ने पूछा।

लंगड़े ने कहा–"नहीं है।"

"उधर लोग आ-जा रहे हैं क्या?" अंधे ने फिर पूछा। इस बार भी लंगड़े ने कहा–"नहीं।"

"क्या बगीचे का कोई पहरा दे रहा है?" अंधे ने तीसरी बार पूछा। लंगड़े ने इस बार भी बताया–"नहीं।"

"तब तो ये कटहल खाने योग्य नहीं हैं।" अंधे ने कहा। अंधे ने बिना देखे ही समझ लिया कि ये कटहल खाने योग्य नहीं, इसलिए लंगड़े की दीखने वाली आँख से भी अंधे की न दीखने वालीं आँख बढ़िया है।

# न्याय का धन

प्राचीनकाल में मलय देश पर धनपाल नामक राजा शासन करता था। उसका शक्ति तथा धन पर अधिक विश्वास था। उसका यह अंधविश्वास भी था कि शक्तिशाली सेना तथा खज़ाने भर धन के होने से किसी भी देश की उन्नति होगी और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इसलिए वह जनता से करों के रूप में जो धन वसूल करता, उसमें से आधा सेना के लिए खर्च करता और बाक़ी धन खज़ाने में भर देता था। इस प्रकार अपने धन को बढ़ते देख वह बहुत ही प्रसन्न रहा करता था। वह जनता की भलाई के लिए खज़ाने से एक कौड़ी भी खर्च नहीं करता था। जनता भी अपनी भलाई आप देखने की आदत डालती गयी।

मगर धनपाल का मंत्री अनेक देश घूम चुका था, वह अनुभवी था। उसने राजा को समझाया कि राजा का यह तरीक़ा अच्छा नहीं है, देश की सच्ची शक्ति तो प्रजा है, राज्य का धन जनता की भलाई के पीछे लगाना न्यायसंगत है। वरना जनता का विश्वास उठ जायगा।

राजा ने सोचा कि मंत्री की बात मानने से धन घटता जायगा, यह सोचकर उसने मंत्री को अपने देश से निकाल दिया।

राजा ने मंत्री को धमकी दी थी कि दूसरे दिन यदि वह उसके राज्य में दिखाई दिया तो उसका सर कटवा दिया जायगा। इसलिए मंत्री उसी दिन जंगलों में चला गया। जंगल में चोरों ने मंत्री को बन्दी बनाया और अपने नेता चण्डविक्रम के पास उसे ले गये।

चण्डविक्रम को जब मालूम हुआ कि वह व्यक्ति मलय देश का मंत्री है, तब उसने सोचा कि यह मंत्री उसे तथा उसके दो सौ

ओंप्रकाश गर्ग

अनुचरों को बन्दी बनाने के लिए आया है। उसका पिंड छुड़ाने के लिए चण्डविक्रम ने मंत्री को मार डालने की सोची।

मंत्री ने चण्डविक्रम से कहा–"मुझे राजा ने देश से निकाल दिया और मुझे बताया कि मैं फिर कभी राज्य में दिखाई दूँ तो मेरा सर कटवा देगा, यहाँ पर तुम लोग मुझे मार डालना चाहते हो! अब मेरी मौत निश्चित है। लेकिन मेरी एक इच्छा है। मलय देश के राजा के खज़ाने में अपार धन भरा हुआ है। कम से कम तुम लोग उसका उपयोग कर सको, तो मैं खुशी से मर जाऊँगा।"

यह बात सुनने पर चण्डविक्रम की शंका और बढ़ गयी। उसने सुन रखा था कि मलय देश के सैनिक बड़े पराक्रमी हैं। इसलिए वे लोग कभी राजधानी में चोरी करने गये न थे। जंगल में रहनेवाले चोरों की बात कोई जानता भी न था। यह मंत्री उसे तथा उसके दल को सैनिकों के हाथ सौंपना चाहता है। यह सोचकर उसने मंत्री से पूछा–"हम लोग राजा के खज़ाने को लूट लेंगे। लेकिन हमारे लूटने तक तुम को भी हमारे साथ रहना होगा। यदि तुमने धोखा दिया तो तुरंत तुम्हारा सर काट देंगे।"

मंत्री ने मान लिया। उसने चोरों के सरदार से बताया कि राजा के सैनिक सिर्फ़ खाऊ हैं, उनमें लड़ने की ताक़त नहीं है। इसके बाद वह भी आधी रात को चोरों के

साथ खज़ाने के पास आ पहुँचा। चोरों के सरदार ने जान लिया कि सैनिक उन्हें पकड़ने की टोह में नहीं हैं। थोड़े से पहरेदार ज़रूर थे, मगर उन्हें बन्दी बनाना कोई मुश्किल का काम न था। इसके बाद चोरों ने पहरेदारों और राजा को बन्दी बनाया। खज़ाना लूट कर सारा धन बोरों में भर दिया और घोड़ों पर लाद दिया।

"धन के साथ तुम लोग आराम से जिओ, अब चोरी करना छोड़ दो। तुम लोग अपने रास्ते चले जाओ, मैं अपने रास्ते जाता हूँ।" मंत्री ने चोरों के सरदार से कहा।

उस वक़्त चोरों के सरदार के दिमाग में एक विचार आया। उसने कहा–"मैंने राजा को बन्दी बनाया, अब मैं ही राजा बनूंगा। तुम्हारा क्या विचार है?"

"तब तो यह सारा धन कहीं और क्यों ले जाते हो? खज़ाने में ही रहने दो।" मंत्री ने समझाया।

"अच्छी बात है।" यह कहकर चोरों के सरदार ने अपने अनुचरों के द्वारा घोड़ों पर से बोरे उतरवा दिये, उन्हें खज़ाने में पहुँचा दिया। जब सभी चोर खज़ाने में थे, तब मंत्री ने खज़ाने के बाहर ताला लगाया।

इसके बाद मंत्री ने राजा और पहरेदारों के बंधन खोल दिये और कहा–"महाराज, देखा है न, आपके खज़ाने को लूटना कैसे आसान है? आपके सिपाही खा-पीकर तोंद बढ़ाये पहरा देने लायक़ भी नहीं रहें। इस धन का उपयोग जनता की भलाई में जब आप करेंगे, तभी वह न्याय का धन कहलायेगा। वरना वह धन चाहे आपके पास रहे, या चोर लूट ले, दोनों बराबर है। इससे देश का कोई लाभ न होगा।"

राजा की आँखें खुल गयीं। उस दिन से राजा मंत्री की हर बात सुनते, जनता की भलाई के लिए धन का उपयोग करने लगा।

# यश की खोज में

एक गाव म सोम नामक एक ग़रीब किसान था। मगर वह बड़ा दुष्ट था। सबको किसान किसी न किसी प्रकार तंग करता था। सोम का एक लड़का था। उसका नाम राम था। राम बड़ा अक्लमंद था।

सोम के पड़ोस में श्याम नामक एक अमीर था। जब अमीर मर गया, तब उसके पुत्र ने बहुत-सा धन खर्च करके दान-धर्म किया और पिता का नाम ऊँचा किया।

यह बात सोम से भूली न गयी थी। जब सोम के अंतिम दिन निकट आये तब उसने राम को निकट बुलाकर कहा–"बेटा, अमीर के पुत्र ने अपने पिता का नाम जैसे ऊँचा किया, वैसे तुम्हें भी मेरा नाम ऊँचा करना चाहिए।" ये शब्द कहकर सोम ने प्राण छोड़ दिये।

राम की समझ में न आया कि अपने ग़रीब तथा दुष्ट पिता का नाम कैसे ऊँचा किया जाय, वह दो-चार दिन सोचता रहा, आख़िर वह एक लाठी ले रास्ते से आने-जाने वालों को पीटने लगा।

"इस राम से उसका पिता सोम ही कहीं अच्छा है।" गाँव वालों ने कहा।

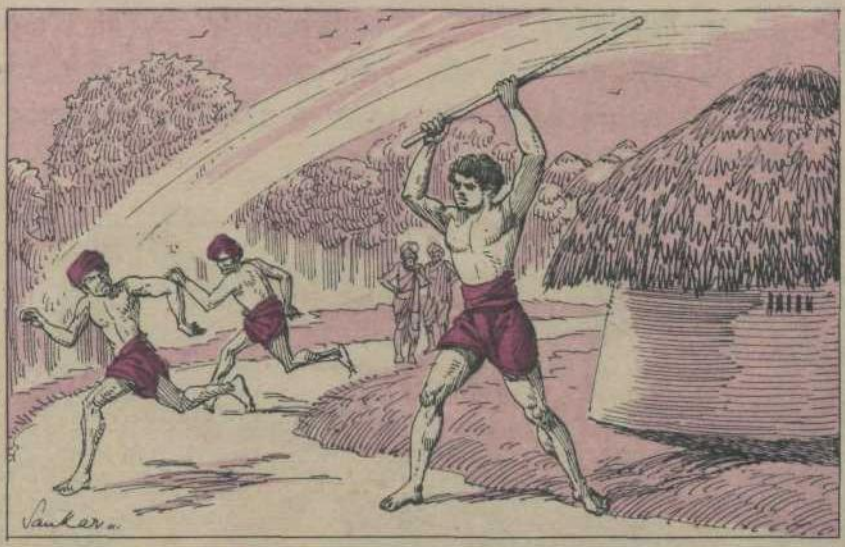

शकुनि ने भाँप लिया कि धृतराष्ट्र पांडवों का वृत्तांत सुनकर भविष्य का ख्याल करके भयभीत हो गया है, यह समाचार उसने कर्ण को सुनाया। तब दोनों ने दुर्योधन के पास जाकर यह खबर सुनायी। इस पर दुर्योधन भी चिंता में डूब गया।

कर्ण ने दुर्योधन को समझाया–"राजन, पांडव जंगलों में नाना प्रकार की यातनाएँ भोग रहे हैं, आप उनके राज्य पर भी अधिकार करके समस्त प्रकार के सुख भोग रहे हैं, इसलिए पांडवों को चिंता करनी चाहिये, आप क्यों चिंता करते हैं? सुनते हैं कि इस वक़्त पांडव द्वैतवन में हैं, इस हालत में आप उनके पास जाकर अपने वैभव का परिचय दीजियेगा तो वे और दुखी होंगे। हम सब ख़ुश हो जायेंगे। आपके रनिवास की नारियों को देख द्रौपदी मन ही मन कुढ़ जायेंगी।" शकुनि ने कर्ण के कथन का समर्थन किया।

दोनों की बातें सावधानी से सुनकर दुर्योधन ने कहा–"आप लोगों की सलाह तो बड़ी अच्छी है, लेकिन मेरा संदेह है कि पिताजी हमें द्वैतवन जाने की अनुमति न देंगे! आप ही लोगों ने बताया कि पांडवों की बुरी हालत पर वे दुखी हैं। इसलिए आप दुश्शासन से भी परामर्श करके कल सुबह मुझे कोई ऐसा उपाय बता दीजिये जिससे हम पांडवों की उस बुरी हालत को अपनी आँखों से देख प्रसन्न हो सके। हमारी इस यात्रा के लिए भीष्म पितामह की भी

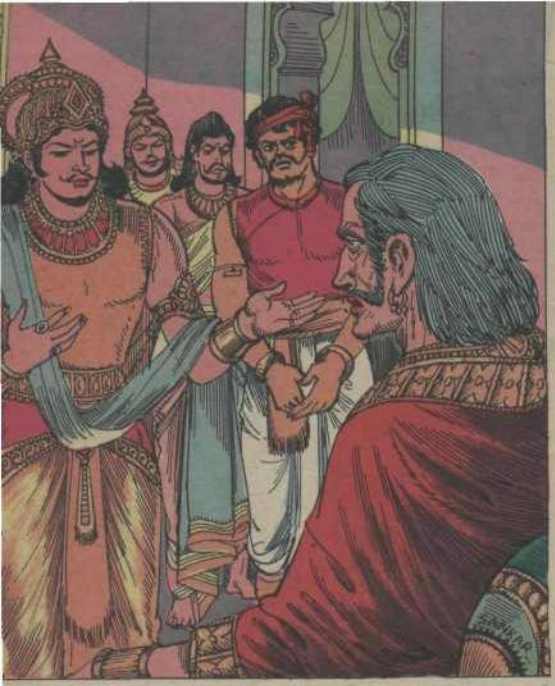

स्वीकृति चाहिए। उन दोनों को मनाने का कोई उपाय सोचिये।"

दूसरे दिन कर्ण शकुनि और दुश्शासन को साथ ले दुर्योधन के पास आ पहुँचा और बोला–"हमारी गायों के रेवड़ द्वैतवन में हैं। इसलिए आप वृद्ध महाराज को समझाये कि उन रेवड़ों की खूँख्वार जानवरों से रक्षा करने की जिम्मेवारी आप पर है। इसलिए इस काम पर द्वैतवन में जाना होगा। यह बात सुनने पर वृद्ध महाराज मान जायेंगे। हम पांडवों को डरा-धमका कर लौट आयेंगे।"

सबने तालियाँ बजाकर कर्ण के उपाय की प्रशंसा की। उन्होंने समंग नामक एक ग्वाले को बुलाकर समझाया–"तुम हमारे साथ चलकर वृद्ध महाराज से बताओ कि हमारी गायें द्वैतवन में हैं।"

ग्वाला समंग उन दुष्टों के साथ धृतराष्ट्र के पास आया और बोला–"महाराज, हमारी गायों के रेवड़ इस वक़्त द्वैत वन में हैं। वहाँ पर गायों के लिए बढ़िया चारा है। रेवड़ अच्छी हालत में हैं, मगर भविष्य में खूँख्वार जानवरों के द्वारा उन्हें ख़तरा न हो, यही बात आप से निवेदन करने आया हूँ।"

इस पर कर्ण और शकुनि ने धृतराष्ट्र से कहा–"दुर्योधन वहाँ जाकर खूँख्वार जानवरों का शिकार खेल ले, तो गायों की सुरक्षा होगी, साथ ही बछड़ों पर चिह्न लगाये जा सकते हैं और उनके पोषण का भी इंतज़ाम करके लौट सकते हैं।"

ये बातें सुनकर धृतराष्ट्र ने कहा–"रेवड़ों की खूँख्वार जानवरों से रक्षा करना तो अच्छा काम है, मगर इस वक़्त द्वैत वन में जाना अच्छा नहीं है। जुएँ में हार कर वनवास करनेवाले पांडव इस समय उसी वन में हैं। तुम लोग उस वन में जाओगे तो कोई न कोई अनहोनी हो सकती है। अन्य पांडवों से डरने की कोई बात नहीं, लेकिन भीम बदला लेने वाले नाग जैसा व्यक्ति है। द्रौपदी भी

इसी श्रेणी की है। तुम लोग जल्दबाज़ हो! तुम लोगों के बीच अगर झगड़ा हो गया तो बड़ा ख़तरा पैदा हो सकता है। हाल ही में अर्जुन स्वर्ग जाकर दिव्यास्त्र प्राप्त कर चुका है। तुम लोग उस के समक्ष ठहर नहीं सकते। इसलिए मेरी बात मानकर तुम लोग न जाओ, बल्कि गायों की रक्षा के लिए किसी दूसरे को भेज दो।"

शकुनि ने धृताराष्ट्र को समझाया–"हम ऐसी कोई अनहोनी बात होने न देंगे। हम पांडवों के पास क्यों जायेंगे? थोड़े दिन वन विहार करके गायों के रेवडों की जाँच करेंगे और अपने रास्ते लौट आयेंगे। पांडव भी युधिष्ठिर की आज्ञा तोड़कर जल्दबाजी न करेंगे। युधिष्ठिर तो साक्षात् धर्म का अवतार जो है।"

धृतराष्ट्र ने इन बातों पर विश्वास करके कहा–"अच्छी बात है! चले जाओ!" दुर्योधन की प्रसन्नता की सीमा न रही। वह कर्ण, शकुनि, दुश्शासन तथा अनेक नागरिकों और उनकी पत्नियों को साथ ले घोष-यात्रा पर चल पड़ा। उसके साथ कई हज़ार रथ, हाथी, घोड़े, सैनिक, शिकारी तथा बन्दी जन भी चल पड़े। गाड़ियों पर तरह-तरह की सामग्री लादी गयी।

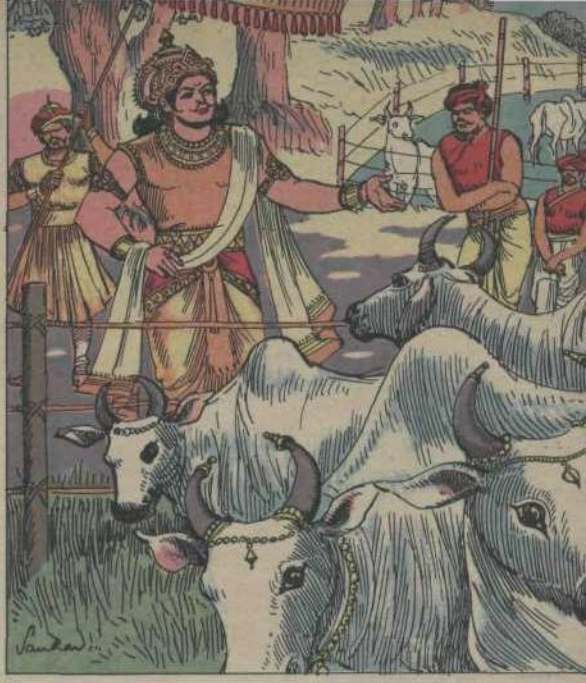

कुछ दिन की यात्रा के बाद वे द्वैत वन में पहुँचे और ठहरने के लिए शिबिरों का प्रबंध किया। रेवड़ों की जाँच करके, गाय, बैल और सांड़ों को अलग किया, सब पर चिह्न लगवाये। गोपालकों को सावधान करके उन्हें खूब पुरस्कार दिये, उनके खेल, नाच-गाने आदि देख मनोरंजन किया। शिबिर वासियों के लिए आवश्यक दूध-दही लाये गये, शिकारियों ने शिकार खेलकर माँस ला दिया।

दुर्योधन नारियों, पुत्रों तथा मित्रों को साथ ले वन का विहार करते उसके सौंदर्य को देख आनंदित हुआ। द्वैत वन के बीच में स्थित सरोवर के पास आया और वहाँ पर अपना पड़ाव डाला।

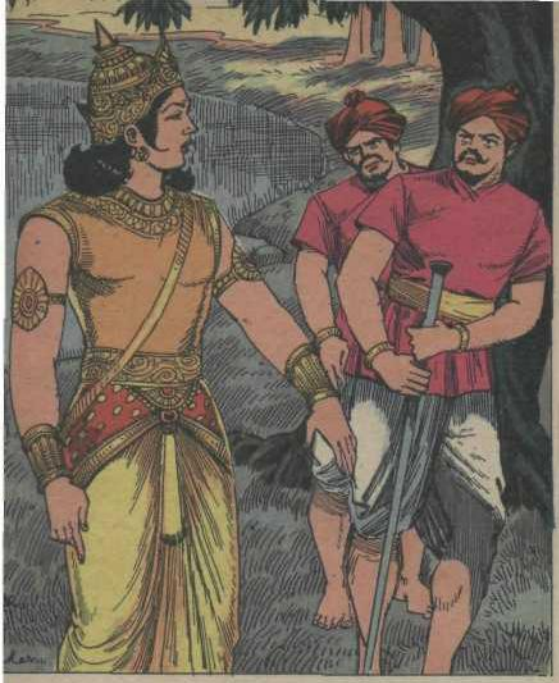

उसी सरोवर के उस पार युधिष्ठिर का आश्रम बना था। दुर्योधन जब वहाँ पहुँचा, तब युधिष्ठिर अपने साथ रहने वाले ब्राह्मणों की मदद से सद्यस्क नामक यज्ञ करने में मग्न थे।

दुर्योधन के आदेशानुसार उसके सेवक सरोवर के इस पार कुटीर बनाने की तैयारी करने लगे। उस वक़्त सरोवर की रक्षा करने वाले गंधर्व भटों ने उन्हें रोकते हुए कहा–"हमारे प्रभु का आदेश है कि यहाँ पर कोई कुटी न बनावे! आप लोग और कहीं अपने कुटीर बनवा लीजिये।"

सेवकों ने जब दुर्योधन को यह खबर सुनायी, तब उसने घमण्ड में आकर अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे गंधर्व भटों को भगा दे। सैनिकों ने गंधर्व भटों के पास जाकर धमकाया–"महाराज दुर्योधन यहाँ पर विहार करने आये हैं। तुम लोग यहाँ से चले जाओ, वरना तुम्हारे प्राणों की ख़ैर नहीं।"

गंधर्व भटों ने हँसकर कहा–"तुम लोग किसको धमकाना चाहते हो? तुम्हारे महाराज की हम परवाह नहीं करेंगे। हमारे प्रभु चित्रसेन नामक गंधर्व राजा हैं। तुम लोग इस प्रदेश को छोड़ उस पर युधिष्ठिर के आश्रम के पास अपने कुटीर बना लो। यह तो हमारे गंधर्व राजा का विहार करने वाला प्रदेश है।"

यह बात सुनकर दुर्योधन क्रोध में आया और गरज उठा–"मुझे आदेश देने वाले ये गंधर्व कौन होते हैं?" इन शब्दों के साथ अपने सैनिकों को गंधर्वों के साथ युद्ध करने भेज दिया।

इस बीच गंधर्वों ने चित्रसेन का आदेश पाकर दुर्योधन के सैनिकों के छक्के छुड़ा दिये। यह दृश्य दूर खड़े देखने वाला कर्ण दुर्योधन की प्रशंसा पाने के लिए गंधर्व भटों पर कूद पड़ा और कुछ भटों को मार डाला। मगर इतने में हज़ारों की संख्या में गंधर्व भटों ने आकर कर्ण को घेर लिया। कर्ण को शत्रु सैनिकों के

बीच घिरे देख दुर्योधन के भाई उसकी मदद के लिए गये। झगड़े ने धीरे-धीरे युद्ध का रूप धारण कर लिया। आखिर चित्रसेन स्वयं युद्धभूमि में आ पहुँचा।

चित्रसेन ने माया-युद्ध प्रारंभ किया। इसे देख दुर्योधन के सैनिक भाग खड़े हुए। दुर्योधन के भाई उन्हें लौटाने का प्रयत्न करने लगे। अकेले कर्ण ने हिम्मत के साथ युद्ध किया, मगर गंधर्व सैनिकों ने उसके रथ के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। तब कर्ण विकर्ण के रथ पर सवार हो भाग गया। दुर्योधन गंधर्वों के हाथों में बन्दी बना। चित्रसेन ने दुर्योधन का वध नहीं किया, बल्कि उसके हाथ बंधवा दिये। तब शेष गंधर्वों ने दुर्योधन के भाई तथा उनकी पत्नियों को बन्दी बनाया।

अपने राजाओं को बन्दी बने देख कौरव सैनिक युधिष्ठिर के आश्रम के पास दौड़े दौड़े गये और बोले–"महात्मा, कौरव कुमारों तथा उनकी पत्नियों को बन्दी बना कर गंधर्व उन्हें गंधमादन पर्वत-प्रदेश में ले जा रहे हैं। कृपा कर के उन्हें छुड़ाइये।"

सैनिकों के मुँह से ये बातें सुनकर भीम ने कहा–"जो होना था, वह काम गंधर्वों ने ही कर दिया। हमें तो बड़ी तादाद में सेना इकट्ठी करके युद्ध करने की

ज़रूरत अब नहीं रह गयी। कठिनाइयों में रहनेवाले लोगों की सहायता भगवान इस रूप में करते हैं।"

इस पर युधिष्ठिर ने भीम को डांटते हुए कहा–"भीम, ऐसी बातें करने के लिए यही समय है? कौरव इस वक़्त हमारी शरण में आये हैं। उनकी रक्षा करना हमारा धर्म है। यदि हमारे ज्ञातियों की पत्नियों का अपमान हो जाय तो क्या वह हमारा अपमान नहीं? मैं इस वक़्त यज्ञ की दीक्षा ले चुका हूँ, इसलिए तुम, अर्जुन, नकुल और सहदेव हमारे सैनिकों को साथ ले गंधर्वों का पीछा करो और कौरव तथा उनकी पत्नियों को छुड़ा

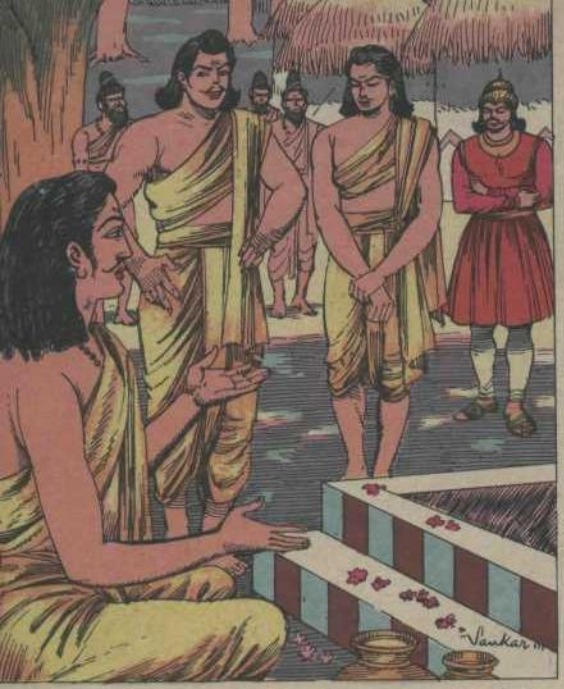

लाओ। जल्दबाजी में आकर गंधर्वों के साथ युद्ध न करो। हो सके तो समझा-बुझाकर काम चला लो, ऐसा संभव न हुआ तो युद्ध करो। मेरी इन बातों को भली भांति याद रखो–हमारे बीच यदि युद्ध आ पड़ा तो कौरव सौ और हम पांच हैं, मगर दूसरों के साथ हमें युद्ध करना पड़ा तो हम एक सौ पांच हैं।"

अर्जुन ने युधिष्ठिर के आदेश का पालन करने का वचन दिया। इसके बाद भीम, नकुल एवं सहदेव के साथ युद्ध के लिए सन्नद्ध हो, तेज़ दौड़नेवाले रथों पर सवार हो, गंधर्वों का पीछा करने चल पड़े। तब कौरव सैनिकों की जान में जान आ गयी।

गंधर्वों को जब पता चला कि पांडव उनका पीछा कर रहे हैं, तब वे रुक गये। अर्जुन ने उनके निकट जाकर समझाया– "हे गंधर्व! तुम जिस दुर्योधन को बन्दी बनाकर ले जा रहे हो, वह हमारा भाई है। उसको छोड़ दीजिये। यह मेरे भाई युधिष्ठिर की कामना है।"

"इन्हें बन्दी बनाने का हमें देवेन्द्र ने आदेश दिया है। उनके आदेश का पालन करना हमारा कर्तव्य है।" गंधर्वों ने कहा।

"गंधर्व राजा के द्वारा नारियों को बन्दी बनाना अनुचित है। हमारी बात मानकर दुर्योधन इत्यादि को तथा उनकी पत्नियों को छोड़ दीजिये। यदि तुम लोगों ने ऐसा नहीं किया तो हमें तुम्हारे साथ युद्ध करना पड़ेगा और अपने भाइयों को छुड़ाना होगा।" अर्जुन ने कहा। मगर गंधर्व युद्ध के लिए तैयार हो गये।

पांडव और गंधर्वों के बीच युद्ध शुरू हुआ। गंधर्वों ने यह सोचकर पांडवों को घेर लिया कि जैसे उन लोगों ने दुर्योधन तथा उनके भाइयों को बन्दी बनाया, वैसे ही पांडवों को भी वे बड़ी आसानी से बन्दी बना सकते हैं, लेकिन पांडवों के सामने उनकी चाल नहीं चली। अर्जुन अपने बाणों से गंधर्व सैनिकों को सताने

Sankar

लगा। उन लोगों ने जो बाण चलाये, उन्हें अर्जुन ने बीच में ही काट दिये।

युद्ध के बीच चित्रसेन ने अर्जुन को पहचान कर कहा–"हे अर्जुन, क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना? मैं चित्रसेन हूँ, तुम्हारा मित्र हूँ। यह दुष्ट दुर्योधन आप तथा द्रौपदी के सामने अपने वैभव का प्रदर्शन करके आप लोगों के दिल को दुख पहुँचाने के लिए अपने परिवार को साथ ले घोष यात्रा के बहाने द्वैतवन में आया है। यह बात जानकर देवेन्द्र ने इन सब को स्वर्ग में ले आने का मुझे आदेश दे भेज दिया है। इसलिए मैं उनके आदेश का पालन कर रहा हूँ।"

इस पर अर्जुन ने कहा–"यह तो दुष्ट ज़रूर है, लेकिन हमारा भाई है। इसे छुड़ा लाने का हमारे अग्रज युधिष्ठिर ने आदेश दिया है। तुम युधिष्ठिर के पास आओ और उनके कहे अनुसार करो तो अच्छा होगा। मैं तुम्हारे मित्र और शिष्य के रूप में यह बात पूछ रहा हूँ।"

इसके बाद चित्रसेन अर्जुन इत्यादि के साथ पांडवों के आश्रम में आया और युधिष्ठिर को सारी कहानी सुनायी। सारी कहानी सुनकर युधिष्ठिर ने निवेदन किया–"हे गंधर्वराज! आपने दुर्योधन का वध नहीं किया, यह हमारे लिए भाग्य की बात है। हमारा वंश एक बहुत बड़े ख़तरे से बच गया। आपको देखने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, इसलिए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। आप मेरी प्रार्थना सुनकर दुर्योधन आदि को छोड़ दीजिये।"

चित्रसेन ने युधिष्ठिर के कहे अनुसार किया और अपने सैनिकों के साथ स्वर्ग को चला गया।

इसके बाद युधिष्ठिर ने दुर्योधन को निकट बुलाकर समझाया–"भाई, कभी ऐसी हिम्मत न करो, इस से सुख प्राप्त न होगा। जो हुआ, उसकी चिंता न करो। तुम अंतःपुर की स्त्रियों को साथ ले घर लौट जाओ।"

# शिवपुराण

[१०]

पार्वती के विवाह के संदर्भ में हिमवान ने जो शुभ-निमंत्रण पत्र भेजा, उसे प्राप्त कर उसके मित्र एवं रिश्तेदार सदल-बल तथा सपरिवार आने लगे। वे लोग अपने साथ सोने के कमलपुष्प, मोती, मानिक, पुवाल इत्यादि उपकार ले आये। विभिन्न पर्वतों के राजा नवरत्न, चन्दन इत्यादि सुगंधित द्रव्य, मत्त हाथी तथा सैंधव अश्वों को भी भेंट स्वरूप लाये। हिमवान ने उन उपहारों को स्वीकार कर अतिथियों का समुचित आदर किया और उनके ठहरने का अच्छा प्रंबध किया।

अतिथियों के ठहरने तथा विवाह के लिए दस योजन लंबा मण्डप निर्माण कराने में हिमवान ने विश्वकर्म की सहायता पाप्त की। हिमवान की राजधानी ओषधीपुर का अद्‌भुत ढंग से अलंकार किया गया।

उधर कैलास में शिवजी हिमवान द्वारा शुभ विवाह निमंत्रण-पत्र पाकर प्रसन्न हुए। वायुदेव के द्वारा नारद को बुला भेजा। नारद ने आकर शिवजी को प्रणाम करके बुलाने का कारण पूछा।

"नारद, पाँच दिनों में मेरा विवाह हिमवान की पुत्री पार्वती के साथ होने जा रहा है। समय कम है। तुम वांछित गमन की शक्ति रखते हो। इसलिए तीनों लोकों के निवासियों को विवाह का निमंत्रण दे आना होगा। कुबेर इत्यादि से कहो कि विवाह के लिए आवश्यक सारी सामग्री अपने साथ लेते आवे।" शिवजी ने नारद को समझाया।

अंतिम पृष्ठ का चित्र

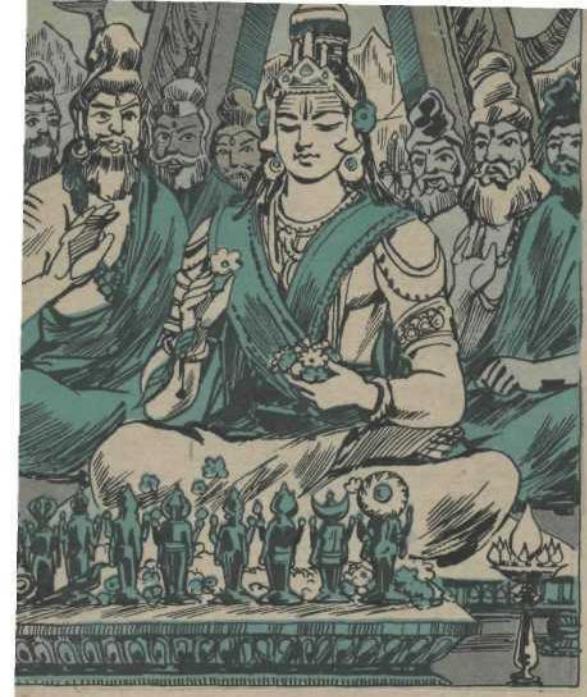

नारद ने बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया। शिवजी से आज्ञा लेकर चल पड़ा। ब्रह्मा, विष्णु, देवेन्द्र आदि देवता, भूलोक तथा नागलोक के निवासियों से बताया– "माघ शुक्ला एकादशी के दिन प्रातःकाल में शिव-पार्वती का विवाह संपन्न होने जा रहा है, इसमें आप सब अवश्य पधारे।" इसके बाद कुबेर को साथ ले विवाह के लिए आवश्यक सारी सामग्री के साथ कैलास को लौट आया।

शिव-पार्वती का विवाह देखने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, देवेन्द्र तथा अन्य देवता, महर्षि इत्यादि कैलास में आने लगे। नन्दीश्वर तथा रुद्रगणों ने अतिथियों का स्वागत किया और उनके लिए उचित निवास और सुविधाएँ भी कर दीं। शिवजी ने सबका परामर्श करके कुशल प्रश्न पूछे।

यह निर्णय हुआ कि शिवजी के विवाह केलिए ब्रह्मा पुरोहित बने, विष्णु, इन्द्र इत्यादि देवता और ऋषि सदस्य बने। शिवजी का मंगल अभिषेक करने के लिए बृहस्पति ने मुहूर्त निर्णय किया। उस मुहूर्त में गरुड, गंधर्व, यक्ष नारियाँ, सप्त मातृकाएँ, लक्ष्मी, सरस्वती, शची, अरुंधती जैसी महापतिव्रताओं ने शिवजी का स्नान करवाया, हरि चन्दन मल कर, कंठ हार पहनाये, गौतम, अत्रि, भृगु आदि महर्षियों ने शिवजी के दाये हाथ में शास्त्रीय पद्धति पर दीक्षाबंदन बांधा तथा नवग्रहों की पूजाएँ करायीं।

इसके बाद ब्रह्मा का आदेश पाकर शिवजी अपने लोगों के साथ मंगलवाद्य, तथा नृत्यों को देखते ओषधीपुर के लिए निकल पड़े। कैलास की रक्षा के लिए रुद्र गणों के नेताओं को नियुक्त कर नंदीश्वर प्रमद गणों को सात ले चल पड़ा। वीरभद्र, चण्डीश्वर, भैरव और नंदीश्वर अपने अपने वाहनों पर रवाना हुए। शंख, डमरू, घंटे, भेरियाँ, वेणु, वीणा एंव मृदंगों की ध्वनि के बीच वीरभद्र तथा भद्रकाली के गण नृत्य करते चल पड़े।

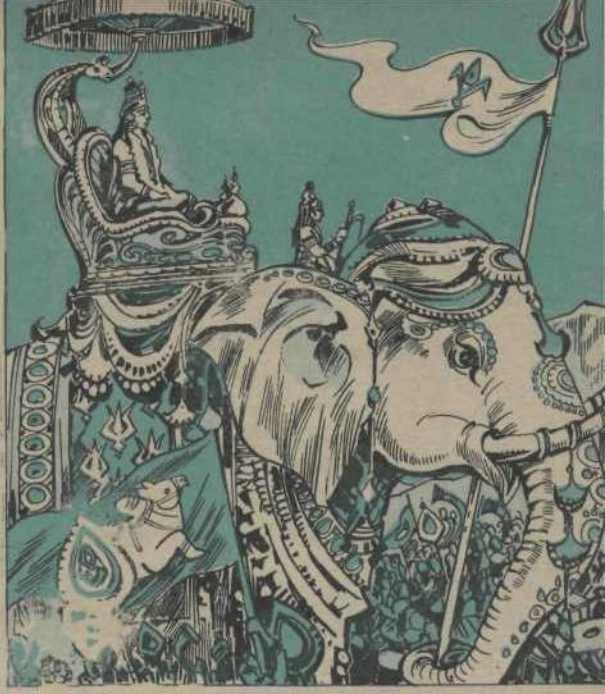

दूलहे शिवजी को ऐरावत पर बिठाया गया। सरस्वती और ब्रह्मा हंस वाहन पर, लक्ष्मी तथा विष्णु गरुड़ वाहन पर, शचीदेवी और इन्द्र चलने वाले सिंहासन पर रवाना हुए। कुबेर नवनिधियों समेत शिवजी के पीछे बैठ गया। देवता नारियाँ, ऋषि-पत्नियाँ तथा अप्सराएँ दिव्य वस्त्रों और सुगंध द्रव्यों को अपने साथ ले विमानों में रवाना हुईं।

वर पक्ष के लोग जब नगर के समीप पहुँच रहे थे तब हिमवान अपने पुरोहित महामुनि गर्ग को, पत्नी मेनका तथा पुत्रों को भी साथ ले गाजे-बाजे के सात अगवानी करने आया, ब्रह्मा, विष्णु, देवेन्द्र तथा ऋषियों को प्रणाम किया, शिवजी के सामने हाथ जोड़ खड़े होकर बोला–"तुम सर्वेश्वर हो, तुम्हारे द्वारा मैं भी आदर पा सका। वर बन कर मेरे घर आओगे तो मैं अपनी पुत्री के साथ तुम्हारा विवाह करूँगा। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरी पुत्री के साथ विवाह करके मुझे तथा मेरे वंश को पवित्र बनाओ।" इसके बाद उसने शिवजी को नये वस्त्र, गंध, पुष्प और तांबूल दिया, बांक़ी सबको दूध, शरबत देकर थकावट दूर करने के लिए पंखे झलवाये।

हिमवान के पक्ष की नारियों ने शिवजी को देख मन ही मन सोचा–"हमारी पार्वती बड़ी भाग्यशालिनी है। एक करोड़ कामदेवों के बराबर सुन्दर पति उसे मिल गया है।" इसके उपरांत मेनका ने शिवजी के समक्ष हाथ जोड़ कर कहा–"हे सदाशिव! दूसरों की बातें सुन कर मैंने तुम्हारी निंदा की। मेरी गलती को क्षमा करो। हमारे घर पधार कर हमारे द्वारा वर-पूजाएँ प्राप्त करके हमारी पार्वती के साथ विवाह करो।" तब सुमंगलियों ने आकर शिवजी को आशीर्वाद दिये।

रास्ते-भर में पुष्प, मोती व अक्षत बिखेरते मेनका और हिमवान शिवजी को जनवासे में ले गये। वर-पूजा करके वर-पक्ष के लोगों के लिए आवश्यक सभी

प्रबंध करके अपने महल को लौट आये। अपने वंश की परिपाटी के अनुसार पार्वती ने अंबिका के मंदिर में जाकर देवी की पूजा की। सुमंगलियों के साथ पालकी पर चढ़ कर जब वह मंदिर में जा रही थी, तब देवताओं ने मन में सोचा–"ये तो परदेवी हैं। इनका विवाह शिवजी के साथ हो जायें तो हमारे सारे कष्ट दूर हो जायेंगे।"

पार्वती अंबिका की पूजा समाप्त करके लौटी। मुहूर्त का समय निकट था। शिवजी को ऐरावत पर विवाह मण्डप में लाये और पीढ़े पर बिठाया गया। मेनका और हिमवान ने अपने जामाता के चरण धोकर उस जल को सर पर छिड़का लिया। इसके बाद उन लोगों ने पार्वती के हाथ को शिवजी के हाथ में रख कर कन्यादान किया। शिवजी पार्वती को देख मन ही मन बहुत आनंदित हुये।

इस प्रकार शिव-पार्वती का विवाह अत्यंत वैभव के साथ संपन्न हुआ। देवता सब शिवजी की अनुमति लेकर अपने-अपने घर चले गये। शिवजी हिमवान के घर बहुत समय तक रहे। उनके मन में जब कैलास जाने की इच्छा पैदा हुई तब उन्होंने यह बात नंदीश्वर के द्वारा मेनका और हिमवान को कहलायी।

मेनका-हिमवान ने पार्वती को शिवजी के साथ भेजने के लिए सारी तैयारियाँ कीं। पार्वती के लिए सुंदर वस्त्र, उसका सिंहासन, परिचारिकाएँ, अनेक गृहोपकरण दहेज़ में देकर पार्वती को शिवजी के हाथ सौंप दिया और कहा–"सदाशिव, पार्वती को प्रेम के साथ रखो।" बड़ी सुमंगलियों ने पार्वती को उचित उपदेश दिये।

यात्रा के लिए उचित मुहूर्त निर्णय कर शिवजी पार्वती समेत कैलास को लौट आये और महर्षियों की सहायता से गृह-प्रवेश किया। तीन दिन तक शिवजी के घर में दावतें चलती रहीं। इसके बाद ब्रह्मा, विष्णु तथा अन्य लोगों ने शिवजी से विदा मांगी, शिवजी ने सब को उचित रूप में उपहार देकर सादर विदा किया।

# १२०. "जलसोख" का शिकार

"स्पंजि" या जलसोख एक समुद्री प्राणी है। मगर उसे देख कोई भी प्राणी नहीं मानता। उसके कोई अंग नहीं होते। न सर होता है और न उसमें खून का संचार होता है। लेकिन वह बढ़ता है, बच्चे देता है। खाना लेता है। जीवित रूप में उस पर एक पतला काला झिल्ली जैसा चर्म ढका रहता है। उसका भीतरी भाग रेशे जैसा होता है।

स्पंजि के कई प्रकार हैं। उनमें कुछ क़िस्म के बड़ी क़ीमती होते हैं। उन्हें समुद्र के भीतर से लोग मोतियों की सीपियों जैसे ऊपर लाते हैं। यहाँ पर उन्हें कांटेदार फावड़े से निकालने वाला चित्र अंकित है। इस चित्र में काम करने वाले को हवा का सेवन करने की नली तथा उसे फिर से नाव में खींचने के लिए आवश्यक रस्सा दिखाई देते हैं।

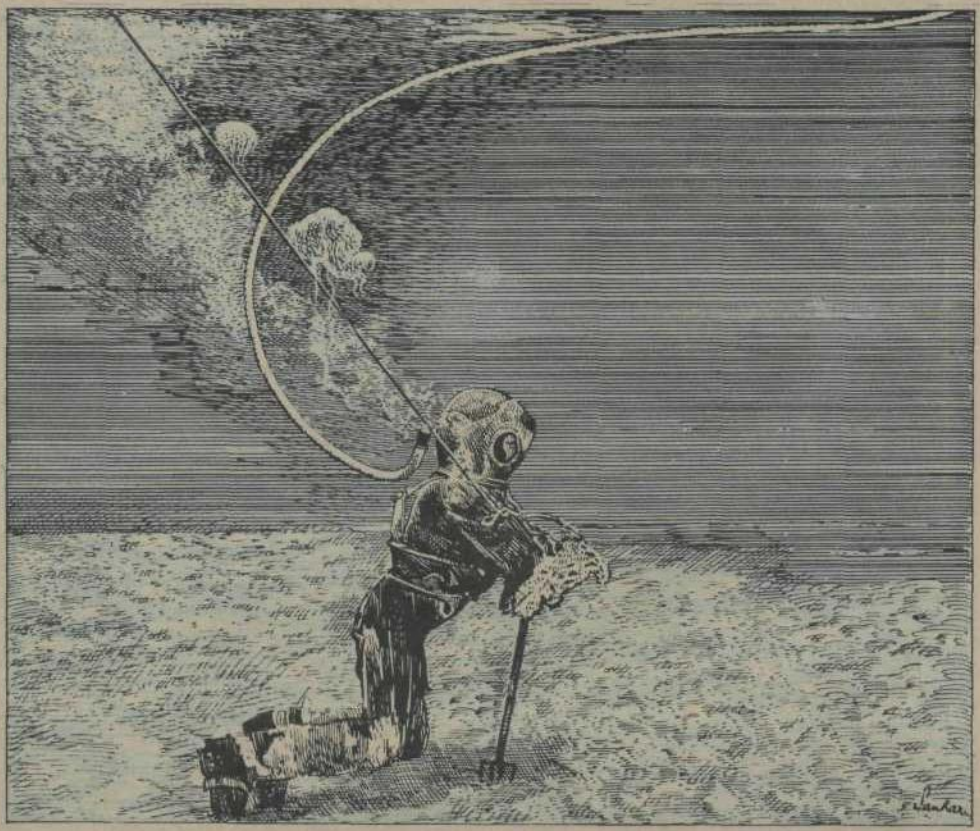

Photo by Anant Desai

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

मेरी रानी दूध पिलाये ।

प्रेषक :
राजीवकुमार

Photo by Brahm Dev

चानमारी रोड़,
चक्रधरपुर

मेरा राजा चोर भगाये ।।

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

# फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ नवम्बर ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ फ़रवरी के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

# चन्दामामा

## इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य


| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| योगी की महिमा | .... | ३ | बल्लू का गधा | .... | ३५ |
| छठा चोर | .... | ५ | पोषित-पुत्र | .... | ३८ |
| शिलारथ | .... | ९ | सच्चा न्याय | .... | ४१ |
| अपराधी कौन है? | .... | १७ | महाभारत | .... | ४९ |
| विद्यासागर | .... | २३ | शिवपुराण | .... | ५७ |
| सज्जनता का दण्ड | .... | २७ | संसार के आश्चर्य | .... | ६१ |

दूसरा मुखपृष्ठ
**वन मानुष**

तीसरा मुखपृष्ठ
**मका सुग्गा**



Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

Vision 711 Hin

Chiclets
12 PIECES
Chiclets
12 PIECES
Chiclets
Chiclets
Chiclets

# रुपये पेड़ों पर नहीं फलते

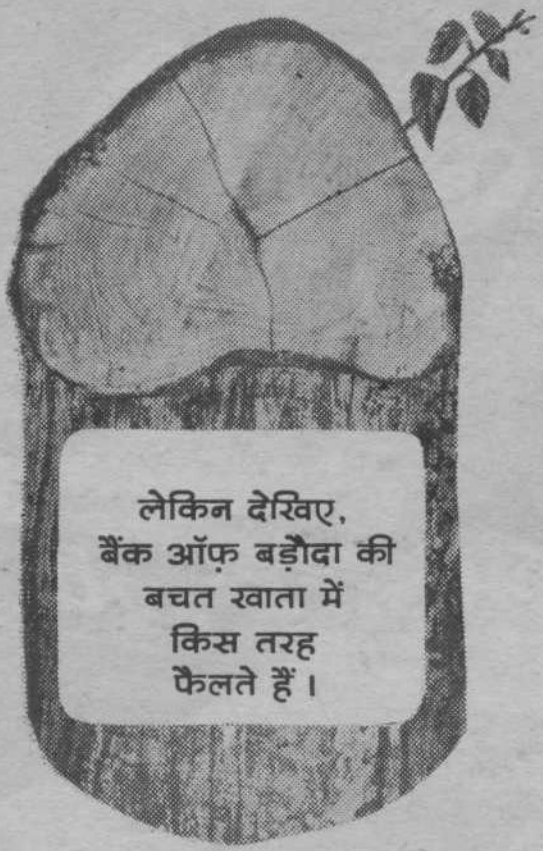


आपके रुपये...यानी आपकी गाढ़ी मेहनत की कमाई! इन्हें बेकार पड़े रहने देना ठीक नहीं। बुद्धिमानी तो तब है जब आपके रुपये सुरक्षित तो रहें ही साथ ही इस पर कुछ आमदनी भी हो सके। आपकी इन्हीं जरूरतों को पूरा करने के लिए हैं—बैंक ऑफ़ बड़ौदा के सेविंग्ज एकाउंट्स।

**सेविंग्ज़ एकाउंट** सिर्फ़ १ रुपया से शुरू कर के ज्यादा से ज्यादा जितना आप चाहें जमा कीजिए और पूरी रक़म पर ब्याज कमाइए। १०,००० रु. की रक़म आप जब चाहें बिना नोटिस निकाल सकते हैं।

**माइनर्स सेविंग्ज़ एकाउंट** १० वर्ष के ऊपर के बच्चे खुद खाता खोल कर चला सकते हैं। १० से १३ साल के बीच के बच्चों के लिए ज्यादा से ज्यादा ४०,००० रुपये की रक़म जमा हो सकती है। १४ साल से ऊपरवालों के लिए कोई सीमा नहीं।

बैंक में जमा रक़म पर ३०००/– रु. तक मिलने वाला ब्याज आयकर मुक्त है तथा १,४०,००० रु. तक की जमा रक़म संपत्ति कर मुक्त।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा में बचत खाता खोल कर अपने रुपयों को फलने-फूलने का मौका दीजिए।

चिर समृद्धि का सोपान

## बैंक ऑफ़ बड़ौदा

मुख्य कार्यालय : मांडवी, बड़ौदा

भारत के लगभग सभी राज्यों में सेवा तत्पर ४५० से भी अधिक शाखाएँ।

यू.के., ईस्ट अफ्रिका, मॉरिशश, फ़िजी द्वीपसमूह तथा गियाना में भी।

Shilpi-BOB 1A/71 hin

shilpi hpma 51/71 hin

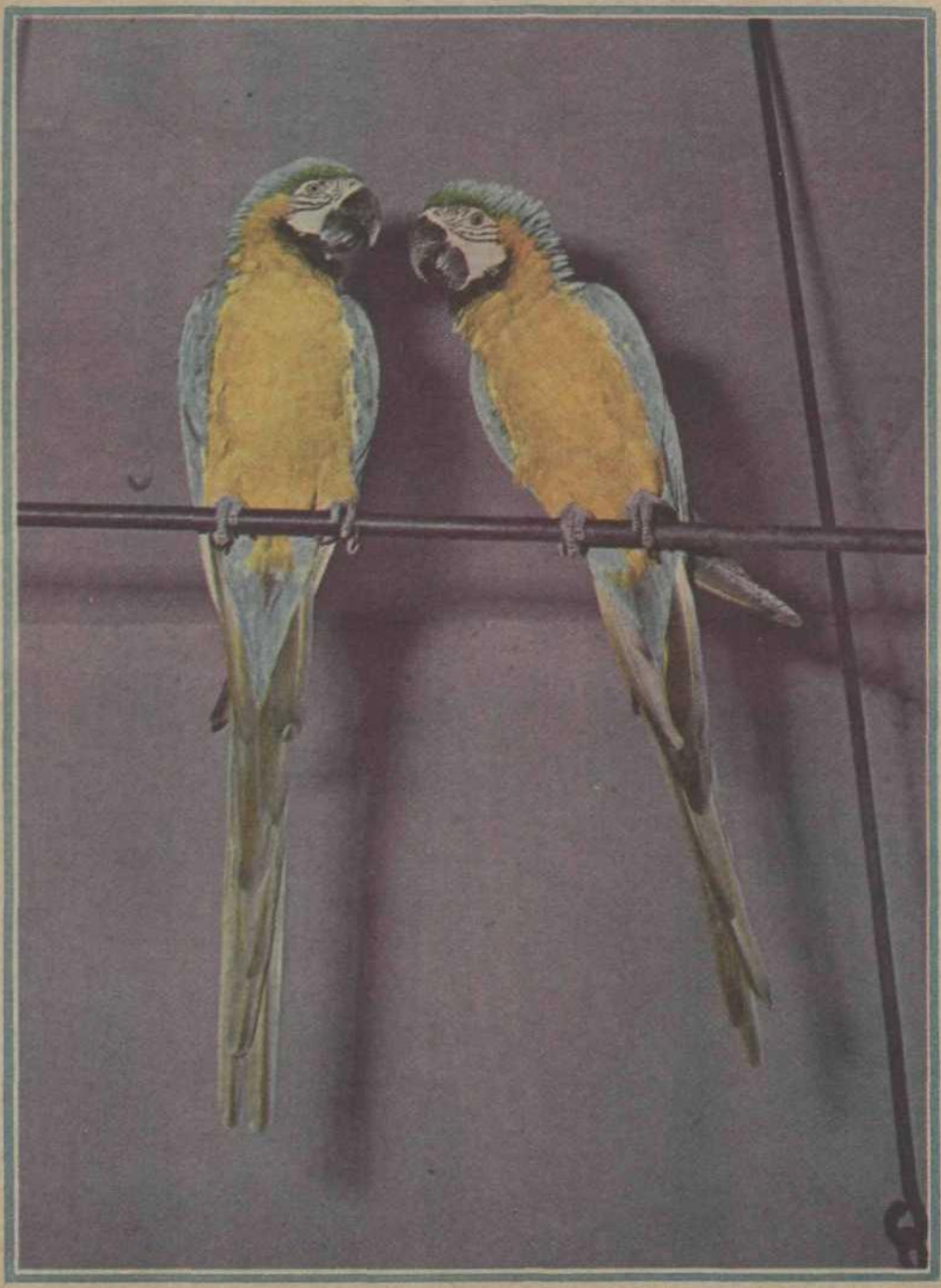

*Photo by :* SURAJ N. SHARMA